बीओआई वार्ता

बैंक ऑफ़ इंडिया की तिमाही हिंदी गृहपत्रिका

दिसंबर, 2022

बैंक ऑफ़ इंडिया

रिश्तों की जमापूँजी

"बैंकिंग में धोखाधड़ी मामलों का अध्ययन-एक संग्रह" पुस्तिका के हिंदी संस्करण का विमोचन

प्रबंध निदेशक एवं सी.ई.ओ. श्री ए. के. दास द्वारा दिनांक 08.09.2022 को बोर्ड निदेशकों की विशेष समिति की 'बड़ी राशि के धोखाधड़ी मामलों की निगरानी' (एम.एल.वी.एफ.) बैठक के दौरान प्रधान कार्यालय, धोखाधड़ी जोखिम प्रबंधन विभाग की पुस्तिका "बैंकिंग में धोखाधड़ी मामलों का अध्ययन-एक संग्रह" का विमोचन किया गया।
छायाचित्र में श्री ए. के. दास, प्रबंध निदेशक एवं सी.ई.ओ. के साथ बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री पी. आर. राजगोपाल, बोर्ड निदेशक श्री एम. के. रल्हन एवं महाप्रबंधक श्री जे. एस. रवि कुमार अपनी टीम के साथ उपस्थित हैं।

मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री लक्ष्मी नारायण रथ द्वारा दिनांक 28.11.2022 को "धोखाधड़ी मामलों की टास्क फोर्स समिति" की तिमाही बैठक के दौरान टीम-एफ.आर.एम.डी. एवं ई.एफ.आर.एम.एस. द्वारा संकलित "बैंकिंग में धोखाधड़ी मामलों का अध्ययन-एक संग्रह" पुस्तिका के हिंदी संस्करण का विमोचन किया गया।

संरक्षक

श्री सुब्रत कुमार
कार्यपालक निदेशक

प्रधान संपादक

श्री प्रमोद कुमार द्विवेदी
महाप्रबंधक

उप प्रधान संपादक

श्री शैलेश कुमार मालवीय
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल

सुश्री मऊ मैत्रा, सहायक महाप्रबंधक

श्री एस चंद्रशेखर, मुख्य प्रबंधक

श्री पुनीत सिन्हा, मुख्य प्रबंधक

श्री निरंजन कुमार सामरिया, वरिष्ठ प्रबंधक

डॉ. पीयूष राज, वरिष्ठ प्रबंधक

यह आवश्यक नहीं कि पत्रिका में
छपे लेखों में व्यक्त विचार बैंक के हों।

प्रधान संपादक,
बैंक ऑफ़ इंडिया, प्रधान कार्यालय,
राजभाषा विभाग, स्टार हाउस, जी-5, जी ब्लॉक,
बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स, बांद्रा (पूर्व)
मुंबई - 400 051

विषय-सूची

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में ग्राहक-उन्मुख बैंकिंग 06

संधारणीय और पर्यावरण हितैषी शहरी आवासीय परिवेश के माध्यम से कार्बन-मुक्त विश्व का निर्माण: तरीके और रणनीतियाँ 09

जी-20 स्थापना, स्वरूप एवं उद्देश्य 12

भारत की शास्त्रीय भाषाएँ 14

एक सर्जिकल स्ट्राइक ऐसी भी.. 16

चित्रकूट: रामायण का आध्यात्मिक पड़ाव 17

इतिहास के पन्नों से 20

अच्छा-बुरा स्वयं में कुछ नहीं,
हमारे विचार ही हमें अच्छा-बुरा बनाते हैं। 21

बैंकिंग व्यवसाय में हिंदी 23

रिश्तों की जमापूंजी 25

यारों की यारी 27

नारी तेरी मुस्कान तेरा श्रृंगार 29

देश के सांस्कृतिक विस्तार में हिन्दी की भूमिका 31

बेरोज़गारी से स्वरोज़गार की ओर 33

तीसरी आँख 35

कार्यपालक निदेशक का संदेश

प्रिय साथियों,

'बीओआई वार्ता' पत्रिका के माध्यम से आपसे पहली बार संवाद करते हुए हर्ष का अनुभव हो रहा है। बैंक की प्राथमिकताओं से आप सभी भली-भांति अवगत हैं। चालू वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही के परिणाम हमारे समक्ष हैं। बैंक का वित्तीय कार्यनिष्पादन उल्लेखनीय रहा है। निवल लाभ में वृद्धि रही है। कासा सहित जमाराशियों में क्रमश: वृद्धि दर्ज़ हुई है। खुदरा ऋण सहित कुल अग्रिमों में इजाफ़ा हुआ है। सकल और निवल एनपीए उल्लेखनीय रूप से कम हुआ है। यह आस्ति गुणवत्ता में सुधार का परिचायक है।

यद्यपि व्यावसायिक निष्पादन महत्त्वपूर्ण है, तथापि हमें अनुपालन संस्कृति को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। अनुपालन पहलुओं में कोई भी शिथिलता निश्चित रूप से और समग्रत: हमारे व्यावसायिक कार्यनिष्पादन को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करती है। इससे बैंक की प्रतिष्ठा पर आंच आ सकती है। अनुपालन संस्कृति के साथ-साथ ग्राहक सेवा भी महत्त्वपूर्ण है। अत: हमें अपनी ग्राहक सेवा के ध्येय को 'ग्राहक संतुष्टि' से एक कदम आगे बढ़ाकर 'ग्राहक प्रसन्नता' तक ले जाना है। किसी भी वित्तीय संस्थान का अमृत-काल ग्राहक की प्रसन्नता से जुड़ा होता है।

इस वित्तीय वर्ष में अब तक बैंक ने राजभाषा कार्यान्वयन में भी नए आयाम स्थापित किए गए हैं। विभिन्न पुरस्कारों ने बैंक की सकारात्मक छवि के निर्माण में सहयोग दिया है। हिन्दी के साथ साथ हमें अपनी अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में भी ग्राहक सेवा प्रदान कर ग्राहक के साथ रिश्तों की जमापूंजी में और वृद्धि करनी है। सभी भाषाओं के विकास से 'भाषाओं का अमृत-काल' संभव होगा।

पूरे देश में आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। इसी दौरान यह कितने गौरव की बात है कि हमारे देश को 'जी20' की अध्यक्षता करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इस अध्यक्षता से न केवल पूरी दुनिया हमारी समृद्ध संस्कृति और उन्नत विकास से, बल्कि 'विविधताओं में एकता' से भी परिचित होगी। 'विविधताओं में एकता' का ही दूसरा नाम 'वसुधैव कुटुंबकम्' है जो इस 'जी20' की थीम भी है।

मुझे खुशी है कि बीओआई वार्ता के इस अंक में विभिन्न विषयों के आलेखों को स्थान दिया गया है। यह पत्रिका वो माध्यम है जिसमें बैंकिंग विषयों के साथ-साथ हम अपने देश, संस्कृति के विभिन्न पहलुओं की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। मुझे आशा है कि हमारे स्टाफ सदस्यों से प्राप्त आलेख इस पत्रिका को और समृद्ध बनाएँगे।

शुभकामनाओं सहित !

भवदीय,

सुब्रत कुमार

(सुब्रत कुमार)

प्रधान संपादक की कलम से

प्रिय साथियों,

"यह दुखड़ों का जंजाल नहीं, लाखों मुखड़ों की भाषा है
थी अमर शहीदों की आशा, अब जिंदों की अभिलाषा है।"

सुप्रसिद्ध कवि श्री गोपाल सिंह नेपाली की हिन्दी के संबंध में उपर्युक्त पंक्तियाँ कितनी सटीक हैं, यह आप सब समझते ही हैं। हिन्दी न केवल हमारे देश की संपर्क भाषा है अपितु संविधान में इसे राजभाषा का गौरव प्राप्त है जो निश्चित रूप से हमारे अमर स्वतंत्रता सेनानियों की प्रिय अभिलाषा थी तथा हम सब इस भावना का सम्मान करते हैं।

हाल में ही हमारे देश को जी-20 की अध्यक्षता प्रदान की गई है जिसने पूरे देश को गर्व एवं अभिमान से भर दिया है। यह भारत एवं सवा-सौ करोड़ देशवासियों पर विश्वास का परिणाम है। यह भारत को दुनिया के समक्ष प्रदर्शित करने एवं बड़ी जिम्मेदारियों को निभाने का स्वर्णिम अवसर है। हिन्दी एवं क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से प्रशिक्षण एवं कौशल प्रदान कर करोड़ों देशवासियों को मजबूत एवं विकसित भारत बनाने के महायज्ञ में शामिल किया जा सकता है जिसकी प्रतीक्षा, आर्थिक वृद्धि एवं विकास तलाश रही वैश्विक अर्थव्यवस्था को भी है।

उपर्युक्त संदर्भों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को सुनिश्चित करते हुए हमें अपनी प्रशिक्षण सामग्री, पत्र लेखन, ईमेल प्रेषण, रजिस्टरों में प्रविष्टियां, टिप्पणी लेखन तथा मौखिक चर्चा आदि कार्यों को भी हिन्दी में करने का संकल्प लेना चाहिए। हिन्दी में कामकाज की प्रगामी प्रगति को सुनिश्चित करने के लिए स्तरीय संदर्भ साहित्य तैयार करने हेतु हमारा बैंक लगातार अपनी हिन्दी पत्रिका "बीओआई वार्ता" प्रकाशित कर रहा है जिसमें विविध विषयों पर बैंक के सभी स्तर के स्टाफ सदस्यों का योगदान रहता है। अत: मैं आप सबको इस नए अंक के प्रकाशन के लिए बधाई देता हूँ तथा आप सब से निवेदन करता हूँ कि आप निरन्तर इस पत्रिका हेतु अपनी मौलिक एवं स्तरीय रचनाएं प्रेषित करते रहें तथा इसे अपनी पत्रिका मानें।

हाल में ही जारी बैंक के अच्छे वित्तीय परिणामों से आप सब परिचित ही हैं। इस उपलब्धि के लिए मैं आप सबको हार्दिक बधाई देता हूं। एतद्वारा मैं आप सबसे अपील करना चाहता हूँ कि मौजूदा वित्तीय वर्ष की इस अंतिम तिमाही में इस प्रकार का कार्यनिष्पादन करें कि बैंक नई ऊँचाइयों को प्राप्त करे।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ,

आपका,

(प्रमोद कुमार द्विवेदी)

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में ग्राहक-उन्मुख बैंकिंग

अखिलेश कुमार श्रीवास्तव
उप प्राचार्य,
स्टाफ प्रशिक्षण महाविद्यालय,
गोवा अंचल

प्रस्तावना :

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था कि "ग्राहक आपके परिसर में आने वाला अति 'महत्वपूर्ण आगंतुक' है। वह हमारे कार्य में बाधक नहीं है क्योंकि उसके आगमन का एक उद्देश्य है। उसकी सेवा करके हम उस पर अनुग्रह नहीं कर रहे हैं, बल्कि वह ऐसा करने का अवसर देकर हमें अनुगृहीत कर रहा है।"

बैंकिंग क्षेत्र, विशेषकर सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के संदर्भ में गांधी जी के उपरोक्त विचार सार्थक प्रतीत होते हैं। बैंकिंग क्षेत्र 'सेवा क्षेत्र' के अंतर्गत आता है, अत: यह तथ्य बहुत महत्वपूर्ण एवं प्रभावी हो जाता है कि ग्राहक बैंक से क्या अपेक्षा करता है और बैंक किस प्रकार से अपने ग्राहकों की अपेक्षाओं एवं आशाओं के अनुरूप अपने कार्यों का निष्पादन करते हैं। मूलभूत सिद्धान्त यह है कि यदि मौजूदा ग्राहक बैंक से जुड़े रहेंगे तथा नए ग्राहक भी निरंतर जुड़ते जाएंगे तो बैंक का कारोबार भी अवश्य बढ़ेगा।

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में ग्राहक उन्मुख बैंकिंग का महत्व:

भारत में स्वतन्त्रता से पूर्व, बैंक 'निजी क्षेत्र' के अधीन थे। उस समय बैंकिंग सेवाएँ चुनिंदा शहरी लोगों, उद्यमियों, सेठ-साहूकारों तक ही सीमित थीं। इसीलिए उस समय की बैंकिंग व्यवस्था को "वर्ग विशेष के लिए बैंकिंग" (क्लास बैंकिंग) कहा जाता था।

देश की आर्थिक एवं सामूहिक प्रगति के मद्देनजर दिसंबर 1967 से निजी बैंकों पर 'सामाजिक नियंत्रण' प्रणाली की आवश्यकता महसूस होने लगी। आर्थिक एवं सामाजिक रूप से पिछड़े हुए क्षेत्रों को आय सृजन का अवसर देने, आत्मनिर्भर बनाने एवं समाज के अनेक वर्गों के मध्य मौजूद आर्थिक एवं सामाजिक खाई को पाटने हेतु सभी को बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध करवाने की आवश्यकता महसूस की गई। इसी क्रम में दिनांक 22 दिसंबर, 1967 को 'राष्ट्रीय ऋण परिषद' की स्थापना की गई।

19 जुलाई 1969 की मध्यरात्रि से तत्कालीन सरकार द्वारा 14 बड़े निजी बैंकों, जिनकी जमा राशि रु. 50 करोड़ से अधिक थी, का 'राष्ट्रीयकरण' कर दिया गया। राष्ट्रीयकरण के पश्चात बैंकों की शाखाएँ अन्य छोटे शहरों में भी खुलने लगीं। अब धीरे धीरे बैंकिंग प्रणाली "वर्ग विशेष के लिए बैंकिंग से व्यापक तथा सामूहिक बैंकिंग" की ओर अग्रसर होने लगी।

वर्ष 1990-91 के बाद से देश में वैश्वीकरण व उदारीकरण का दौर आया जिसके फलस्वरूप बैंकों में प्रतिस्पर्धा तेज़ हो गई। किसी भी व्यापारिक संस्थान, संगठन अथवा सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक के लिए अपने ग्राहकों को संतुष्ट रखना एवं उनको अपने संस्थान के साथ जोड़े रखना अति महत्वपूर्ण होता है। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को, विशेष रूप से "ग्राहकों की पसंद, प्राथमिकताओं एवं जरूरतों" को केंद्र में रखते हुए अपनी नीतियाँ बनानी चाहिए। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की कार्यप्रणाली तथा कार्य-पद्धति सुगम, सरल एवं पारदर्शी होनी चाहिए। परिवर्तन

आज के युग की मांग है। हर क्षेत्र में बदलाव आ रहा है, और बैंकिंग उद्योग भी इससे वंचित नहीं है।

आज का युग प्रतिस्पर्धा का युग है:

आज का युग 'प्रतिस्पर्धा का युग' है एवं ग्राहक के पास बैंकिंग कारोबार से संबंधित विभिन्न विकल्प हैं, अर्थात यदि किसी ग्राहक को एक बैंक से उत्तम सेवा नहीं मिलती है तो वह इस संबंध में संबंधित विभाग तथा अन्य शिकायत निवारण कार्यालय में उस बैंक की शिकायत कर सकता है, साथ ही दूसरे बैंक से आसानी से सम्पर्क कर सेवा प्राप्त कर सकता है। अत: उत्तम ग्राहक सेवा देना एवं ग्राहक को उसकी जरूरतों एवं अपेक्षाओं से अधिक सेवा प्रदान करना, आज के समय में सभी बैंकों के लिए एक विशेष चुनौती है। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को अपने कारोबार में ग्राहकों पर ध्यान देते हुए तीन तथ्यों पर विशेष ध्यान देना होगा अर्थात 'व्यावसायिकता, धैर्य और ग्राहक प्रथम'; क्योंकि एक 'संतुष्ट एवं प्रफुल्लित ग्राहक' स्वत: ही 'प्रचार एवं विपणन' का एक सशक्त माध्यम बन जाता है। बैंक का कारोबार बढ़ाने में वर्तमान ग्राहकों के साथ-साथ, नए ग्राहकों को बैंक से जोड़ने में एक संतुष्ट ग्राहक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस हेतु बैंक को किसी भी प्रकार की कोई अतिरिक्त लागत भी नहीं लगती है।

वर्तमान युग प्रौद्योगिकी का युग है:

यह सत्य है कि आज का युग प्रौद्योगिकी का युग है। आज हम सब का जीवन बहुत बदल गया है। प्रौद्योगिकी का विकास, नए सांस्कृतिक मानदंडों, नई प्राथमिकताओं और इंटरनेट के द्वारा प्रसारित संचार के नए और तेज माध्यमों ने आज की पीढ़ी के जीवन जीने के तरीके में बहुत से बदलाव किए हैं। इन बदलावों ने जीवन को बहुत सरल बना दिया है। एक क्षण में अपनी कोई भी बात, कोई भी तस्वीर, यहाँ तक कि धनराशि का अंतरण दुनिया के किसी भी व्यक्ति को उपलब्ध करा सकते हैं। अपनी जरूरत की वस्तुएँ खरीदने के लिए बाजार जाने की आवश्यकता नहीं है। आपके एक 'क्लिक' पर सब सामान आपके घर पर उपलब्ध हो जाता है। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के लिए अपने कारोबार में ग्राहकों की जरूरतों एवं अपेक्षाओं पर ध्यान देते हुए अपनी नीतियों एवं कार्यप्रणाली में समयानुसार व्यापक तथा व्यावहारिक बदलाव करते रहने की आवश्यकता है। उपरोक्त तथ्यों एवं वास्तविकताओं को ध्यान में रखते हुए सभी बैंक तेजी से 'डिजिटल बैंकिंग' की और अग्रसर हो रहें हैं तथा विभिन्न प्रकार के "डिजिटल उत्पाद एवं ऑनलाइन सुविधाएँ" भी ग्राहकों को उपलब्ध करवा रहे हैं। इस व्यवस्था से एक और ग्राहक को लाभ है, वहीं दूसरी तरफ बैंकों को भी अनेक फायदे हैं।

ग्राहक को लाभ:

ग्राहक सप्ताह के सातों दिन 24×7 कहीं भी-कभी भी, केवल एक क्लिक से, अपने बैंक खाते से संबंधित लेन-देन कर सकता है। परिणामस्वरूप उनके बहुमूल्य समय की बचत होती है तथा बैंक जाने हेतु यात्रा व्यय भी बचता है। साथ ही, नकदी लाने और ले जाने का जोखिम भी समाप्त हो जाता है। अपने सभी लेन-देनों के रिकॉर्ड की भी जांच कर सकता है।

बैंक को लाभ:

दूसरी तरफ बैंक को भी अनेक लाभ हैं, जैसे कि शाखा में ग्राहक कम आते हैं, अत: बैंक उस बचे हुए समय का सदुपयोग किसी अन्य लाभप्रद तथा महत्वपूर्ण कार्य में कर सकते हैं। यदि स्वयं ग्राहक के द्वारा किए गए लेन-देन में किसी प्रकार की गलती हो जाती है तो इसके लिए भी वह स्वयं ही जिम्मेदार होता है, बैंक नहीं। लेन-देन में बैंक की परिचालन लागत में भी कमी आती है।

परंतु उपरोक्त तथ्यों के बावजूद, बैंकों के सामने साइबर अपराधों को रोकने की चुनौती बनी हुई है। देशवासियों के लिए बढ़ते हुए साइबर अपराध एक बड़ी चुनौती के रूप में सामने आ रहे हैं, हालांकि सभी बैंक तथा भारतीय रिजर्व बैंक भी, इससे बचने के समस्त उपायों सहित सम्पूर्ण सावधानी बरतने के संबंध में नागरिकों को जागरूक भी कर रहे हैं ताकि वे अपनी व्यक्तिगत सूचनाएँ जैसे कि बैंक के खाते की जानकारी, डेबिट/क्रेडिट कार्ड की जानकारी किसी को न दें, संदिग्ध मेल/फ़ाइल किसी को न खोलें और निवेश की लुभावनी योजनाओं (पोंज़ी योजनाएँ) पर ध्यान न दें इत्यादि।

बैंकों को यह सुनिश्चित करना होगा कि किस तरह से डिजिटल प्रणाली की आधारभूत संरचना को सुदृढ़ किया जा सकता है । जन-जन तक इस सुविधा और आधुनिक तकनीक को सरल एवं सुगम तरीके से पहुंचाया जा सकता है। बदलते समय के अनुसार तकनीक एवं सुरक्षा प्रणाली में समुचित सुधार किया जाए। अपने सभी उत्पादों, नियमों एवं योजनाओं के बारे में समस्त बैंककर्मियों एवं ग्राहकों को सही तरीके से जानकारी

प्रदान कर 'जागरूक' किया जाए तथा इनके महत्व के बारे में भी बतलाया जाए।

विभिन्न विनियामक के अंतर्गत अनुपालन:

"बैंकिंग कोड्स तथा स्टैंडर्ड्स बोर्ड ऑफ इंडिया (बीसीएसबीआई)": वर्ष 2006 में ग्राहकों के प्रति बैंक की प्रतिबद्धता संहिता तथा सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों के प्रति बैंक की प्रतिबद्धता संहिता के संबंध में ग्राहकों के अधिकारों तथा उनके बीच जागरूकता पैदा करने हेतु "बैंकिंग कोड्स तथा स्टैंडर्ड्स बोर्ड ऑफ इंडिया (बीसीएसबीआई)" की स्थापना की गई। यह ग्राहकों को "बेहतर एवं पारदर्शी सेवा" देने हेतु उठाया गया कदम है। अत: इस संदर्भ में सभी बैंक ग्राहकों को बेहतर, सुगम एवं पारदर्शी सेवा एवं परिचालन कार्यप्रणाली उपलब्ध करवाने हेतु निरंतर प्रयासरत हैं।

'ईज़ (EASE)': सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की छवि में सुधार हेतु नवंबर 2017 में हुए 'मंथन' में 'ईज़ (EASE)' अर्थात एन्हांस्ड एक्सेस एंड सर्विस एक्सीलेंस की अवधारणा आई, जिसके अंतर्गत 6 सिद्धान्त/विषयवस्तु रखे गए हैं जैसे कि ग्राहक के प्रति उत्तरदायी होना, ज़िम्मेदार बैंकिंग, आवश्यकतानुसार ऋण देना, उद्यमी मित्र बनना, वित्तीय समावेशन तथा डिजिटलीकरण को बढ़ाना और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की मानवीय आस्ति (कर्मचारियों) का समुचित विकास करके एक ब्रांड स्थापित करना। वर्तमान में भारत में ईज़ (EASE)-5.0 श्रंखला के दिशानिर्देश चलन में हैं।

वित्तीय समावेशन: सरकार के दिशानिर्देश एवं भारतीय रिजर्व बैंक के निर्देशों के अनुपालन हेतु सभी बैंक समाज के पिछड़े एवं दुर्बल वर्ग तथा कम आय वाले वर्गों को वहन करने योग्य मूल्यों पर बैंकिंग क्षेत्र की विभिन्न प्रकार की वित्तीय एवं सामाजिक सुरक्षा संबंधित सेवाएँ सुगमता से उपलब्ध करवा रहे हैं।

डोर स्टेप बैंकिंग: वित्त मंत्रालय के दिशानिर्देशों के अंतर्गत एवं 'ईज़' (EASE) के अनुसार सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में सुधार हेतु नियमों के समुचित अनुपालन के संदर्भ में सभी बैंक विभिन्न प्रकार की सेवाएँ ग्राहकों के द्वार तक पहुंचा रहे हैं। वरिष्ठ एवं दिव्यांग नागरिकों का विशेष ध्यान रखने हेतु बैंकिंग के इस रूप की शुरुआत की गई है।

ऑनलाइन शिकायत प्रणाली: दामोदरन कमेटी की सिफ़ारिश नं. 62, 63 तथा 64 के अनुपालन हेतु सभी बैंक ग्राहकों की शिकायतों के समयबद्ध तथा अपेक्षा के अनुरूप निवारण करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। इसी दिशा में सभी बैंकों ने ग्राहकों पर ध्यान देते हुए ऑनलाइन शिकायत प्रणाली का सरल तंत्र अपने अपने बैंक में लागू किया है। सभी बैंकों को ग्राहकों से प्राप्त हुई शिकायतें एवं लंबित शिकायतों का विवरण सार्वजनिक करना पड़ता है।

ग्राहक बैठक : भारतीय बैंक संघ (आईबीए) के दिनांक 05.03.2020 के पत्र के दिशानिर्देश के अनुसार सभी बैंकों की शाखाओं को प्रत्येक महीने की 10 तारीख को ग्राहकों के साथ 'ओपन हाउस' बैठक का आयोजन करना है। इस बैठक में ग्राहकों की शिकायतों को धैर्यपूर्वक सुना जाना चाहिए तथा निर्धारित समय सीमा के भीतर ग्राहकों की अपेक्षाओं के अनुरूप शिकायतों का निवारण किया जाना चाहिए।

ग्राहकों की प्रतिक्रिया एवं सुझाव का महत्व: किसी भी संस्थान अथवा बैंक की कार्यपद्धति, उत्पाद एवं सेवाएँ ग्राहकों की आवश्यकताओं एवं पसंद के अनुरूप हैं या नहीं तथा ग्राहक को स्वीकार्य हैं अथवा नहीं, यह जानने के लिए ग्राहकों से समय -समय पर उनकी निष्पक्ष प्रतिक्रिया एवं सकारात्मक सुझाव आमंत्रित किए जाने चाहिए तथा बैंकों द्वारा इन सभी प्रतिक्रियाओं और प्राप्त सुझावों पर समुचित विचार करके व्यावहारिक तथा महत्वपूर्ण निर्णय लिए जाने चाहिए।

निष्कर्ष:

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए अंत में यही निष्कर्ष निकलता है कि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को ग्राहकों की "अपेक्षाओं, आवश्यकताओं एवं पसंद" को अपनी "नीतियों, कार्यपद्धति, उत्पादों एवं कार्यप्रणाली के परिचालन के केंद्र" में सर्वथा स्थान देना होगा। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का कारोबार तभी बढ़ेगा जब 'ग्राहक प्रथम' के सिद्धांत का बैंक निष्ठा से पालन करेंगे। तभी ग्राहक संतुष्ट रहेंगे और बैंक से निरंतर जुड़े रहेंगे। परंतु इसके समानान्तर बैंकों को अपने 'आंतरिक ग्राहक' अर्थात बैंककर्मियों, जो कि बैंक के लिए 'मानव संपत्ति' है, का भी सम्पूर्ण ध्यान रखना होगा और उनके पेशेवर कौशल में निरंतर वृद्धि करनी होगी।

संधारणीय और पर्यावरण हितैषी शहरी आवासीय परिवेश के माध्यम से कार्बन-मुक्त विश्व का निर्माणः तरीके और रणनीतियाँ

पम्मी कुमारी
लिपिक
आंचलिक कार्यालय
भुवनेश्वर अंचल

साक्ष्यसिद्ध प्रलेखित इतिहास के लंबे कालखंड में हड़प्पाकालीन कस्बों से लेकर वर्तमान शहरों तक के परिवर्तन की इस यात्रा में आवासीय गतिविधियां क्रमशः सकारात्मक विकास करती रही हैं। तीव्र औद्योगीकरण एवं तकनीकी अनुसंधानों ने मानवीय जनजीवन को अधिक स्थायी, सहज, सरल तथा सुविधापूर्ण बनाया है। 'गागर में सागर' समेटे आधुनिक नगरीय व्यवस्थाएं हमें नैसर्गिक अनुभव तो दे रही हैं, किंतु विश्व इसकी एक बहुत बड़ी कीमत जलवायु परिवर्तन के रूप में चुका रहा है । प्रत्येक घर में खड़े वाहनों से लेकर प्रत्येक खिड़की से टंगे वातानुकूलन यंत्रों तक सभी इसमें अपना योगदान दे रहे हैं। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में शहरीकरण का यह मॉडल सतत विकास हेतु अनुकरणीय नहीं कहा जा सकता। सुविधाजनक संसाधनों के बढ़ने से प्रति व्यक्ति कार्बन फुटप्रिंट्स भी बढ़ रहे हैं। रोजगार के अवसर एवं बेहतर जीवन की तलाश में लोग शहरों की तरफ आते ही रहेंगे। अतः शहरों के विस्तार को नियंत्रित तो नहीं किया जा सकता, परंतु एक सजग एवं जिम्मेदार पीढ़ी के तौर पर हमें शहरी आवासीय गतिविधियों में आवश्यक परिवर्तन कर एक कार्बन-मुक्त विश्व बनाने के लिए नवीन रणनीतियां तलाशनी होंगी। आखिर हम अपने विकास के लिए पृथ्वी एवं प्रकृति का नुकसान तो सहन नहीं ही कर सकते हैं। पृथ्वी को तो सदा ही माता का दर्जा दिया गया है - 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः'।

मौजूदा समस्याएँ

मानवीय चेतना, इच्छाओं को जन्म देती है और इच्छाएँ आवश्यकताओं को। भारत में कृषि भूमि पर बढ़ रहे जनसंख्या दबाव एवं वैकल्पिक रोजगार अवसरों की आवश्यकता ने शहरों की ओर लोगों के पलायन को तेज किया है। इससे मौजूदा शहरों में उपलब्ध संसाधनों एवं सुविधाओं का आनुपातिक ह्रास हुआ है। उदाहरणस्वरूप आवास की समस्याएं, अपशिष्ट प्रबंधन, पेयजल की कमी एवं स्वच्छता में कमी आदि समस्याएं आम होती जा रही हैं। जिस अनुपात में शहरों पर जनसंख्या दबाव बढ़ा है, उस अनुपात में सड़क, सार्वजनिक परिवहन, हरित क्षेत्र, पार्किंग एवं यातायात प्रबंधन जैसी नागरिक सुविधाओं का विस्तार नहीं हो पाया है। इन सुविधाओं के अभाव में अनियोजित उपनगरीय क्षेत्र बनने लगे हैं, जिसमें कहीं गलियों से पृथक होते मकानों का झुंड मिलता है तो कहीं झुग्गियां। जलवायु परिवर्तन पर दुनियाभर के अग्रणी जलवायु वैज्ञानिकों ने अपनी आकलन रिपोर्टों में बार-बार यह बताया है कि किस प्रकार अधिकांश जलवायु समस्याओं का मूल शहरी क्षेत्रों में ही केंद्रित है। दुनियाभर के कुल कार्बन उत्सर्जन का 70 प्रतिशत से अधिक केवल शहरों से हो रहा है। इसी को देखते हुए यूएन-हैबिटेट के कार्यकारी निदेशक मैमुनाह मोहम्मद शरीफ ने कहा, "जलवायु परिवर्तन, जो सतत विकास के लिए सबसे बड़ा खतरा है, के खिलाफ लड़ाई शहरों में ही जीती या हारी जाएगी।"

समाधान एवं चुनौतियाँ

1. स्थान का चयन एवं भवन डिजाइन : - बढ़ती जनसंख्या को ध्यान में रखते हुए ऐसे संधारणीय शहरों के निर्माण की आवश्यकता है जो भावी विस्तार और विकास के अनुरूप हों। शहरों में आवासीय बसाव का क्षेत्र निर्धारण करने में सार्वजनिक परिवहन तंत्र से निकटता एवं पर्याप्त हरित परिवेश की उपलब्धता आदि को ध्यान में रखा जाना चाहिए। आवासीय क्षेत्रों से बस या रेल स्टेशन, स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, पार्क, जिम और कैफेटेरिया आदि की निकटता, कार और मोटरसाइकल जैसे व्यक्तिगत वाहनों के उपयोग को घटाती है। साथ ही, आवासों के डिज़ाइन बनाते समय ऊर्जा साधन, जल तथा अपशिष्ट प्रबंधन आदि के प्रति-यूनिट पर्यावरणीय प्रभाव का मूल्यांकन करना भी आवश्यक है।

2. एच.वी.एसी. (हीटिंग, वेंटिलेशन और एयर कंडीशनिंग) :- आवासीय इमारतों, व्यावसायिक भवनों, होटलों या शॉपिंग कॉम्प्लेक्स आदि में कुल कार्बन उत्सर्जन का 40 प्रतिशत केवल एच.वी.एसी. (हीटिंग, वेंटिलेशन और

एयर-कंडीशनिंग) से ही होता है। अत: ऐसे सिस्टम का कुशल संचालन और समयबद्ध रखरखाव कार्बन फुटप्रिंट को कम करता है। इस प्रणाली को और बेहतर करने के लिए पूर्व-निर्धारित घंटों के दौरान नियत समय हीटिंग और कूलिंग सिस्टम का इस्तेमाल किया जा सकता है। अंदर की हवा को ताजा और गंध मुक्त रखने के लिए अधिकांश इमारतों में वेंटिलेशन सिस्टम हर समय चलता रहता है। ऊर्जा बर्बादी से बचने के लिए इसका नियमन भी आवश्यक है। इसके अलावा, सेंसर आधारित प्रणालियाँ इनडोर वायु गुणवत्ता को माप सकती हैं और यह निर्धारित कर सकती हैं कि कब कितने वेंटिलेशन की आवश्यकता है।

3. ऊर्जा नियंत्रण तकनीकों का प्रयोग :- किसी व्यावसायिक भवन में उपयोग की जाने वाली ऊर्जा का लगभग 35 से 40 प्रतिशत उपयोग प्रकाश संबंधी उपकरणों के लिए होता है। इस दृष्टिकोण से 'ओपन प्लान ऑफिस' एक बेहतर विकल्प है। हल्के रंग का इंटीरियर फिनिश, इमारत के भीतर दिन के उजाले को और अधिक वितरित करने में मदद करता है। गर्मियों के मौसम में सूर्य की अधिक गर्मी ओवरहीटिंग का कारण बनती है और कूलिंग की जरूरत को बढ़ाती है। इसके नियंत्रण के लिए सोलर कंट्रोल विंडो फिल्मों का उपयोग किया जा सकता है जो ऊर्जा व्यय में कटौती करके कार्बन फुटप्रिंट्स को कम कर सकते हैं। इसके अलावा स्टील-फ्रेम वाली इमारतों में "थर्मल शॉर्ट्स कैविटी-इंसुलेटेड वॉल सिस्टम" (निरंतर इन्सुलेशन) ऊर्जा की बचत करने में मदद करता है ।

4. पुनर्नवीकृत (रीसायकल्ड) निर्माण सामग्रियों का उपयोग :- रीसाइकिल करने योग्य निर्माण-सामग्री का चुनाव पर्यावरण के लिए हितकर होने के साथ हमारे खर्च को भी कम करता है। उदाहरणस्वरूप, पुनर्चक्रण के माध्यम से स्टील का उत्पादन पारंपरिक इस्पात निर्माण की तुलना में काफी कम ऊर्जा का उपयोग करता है। पुनर्चक्रण स्टील खनन के कचरे से लेकर वायु प्रदूषण और जल प्रदूषण तक को कम करता है ।

5. जल प्रयोग संबंधी नीतियाँ :- किसी भी इमारत के कार्बन फुटप्रिंट को बढ़ाने वाला एक प्रमुख कारक है - पानी की आपूर्ति, उपचार और उपयोग के लिए खर्च की गई ऊर्जा। जल संरक्षण और उसके पुन: उपयोग के लिए आवश्यक डिजाइनिंग आधुनिक भवन निर्माण का एक महत्वपूर्ण पहलू है। पानी का लीक होना एक बड़ी समस्या है, जिसे सामान्य उपकरणों के प्रयोग तथा सही रखरखाव द्वारा आसानी से कम किया जा सकता है। पारंपरिक शौचालयों के स्थान पर फ्लश वॉल्यूम जैसे उच्च दक्षता वाले शौचालयों का प्रयोग भी जल-संरक्षण में मददगार हो सकते हैं। आधुनिक इमारतों में वर्षा-जल के संचय के लिए आवश्यक सिस्टम डिजाइन किया जाना चाहिए। इस संचित जल का उपयोग शौचालयों, बागवानी और वाशिंग मशीन आदि के लिए किया जा सकता है।

6. अपशिष्ट जल उपचार व प्रबंधन :- अपशिष्ट जल उपचार व प्रबंधन संबंधी एकीकृत दिशानिर्देशों के अभाव में ये गंदगियाँ शहरों में प्रदूषण की प्रमुख कारक बन चुकी हैं। रिवर्स डम्पिंग और नदियों में अनुपचरित अपशिष्ट प्रवाह वर्जित होने पर भी उद्योगों की मनमानी बढ़ती जा रही है। अत: इस दिशा में नीतिगत स्तर पर सरकारों द्वारा ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय मानकों के निर्धारण एवं उनका कड़ाई से अनुपालन करके ही हम अगली पीढ़ियों को एक स्वच्छ परिवेश दे सकेंगे।

7. अक्षय ऊर्जा के उपयोग पर बल :- बेहतर बिल्डिंग प्लान वही है जिसमें ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पवन-विद्युत, ताप-ऊर्जा, सौर-विद्युत, फोटोवोल्टिक सिस्टम आदि को शामिल किया गया हो। सौर जल-तापन सिस्टम को भी भवन की दीवारों या छत पर आसानी से स्थापित किया जा सकता है जिससे पारंपरिक ऊर्जा की मांग कम होती है।

8. मानदंडों का निर्धारण एवं रेटिंग प्रणाली का विकास:- अबू धाबी में शहरी नियोजन और नगरपालिका विभाग द्वारा 2010 में 'एस्टिडामा पर्ल कार्यक्रम' लॉन्च किया गया था। यह रेटिंग प्रणाली अलग-अलग कारकों पर आधारित होती है जैसे पानी और ऊर्जा की खपत में कमी, अपशिष्ट पुनर्चक्रण में सुधार और निर्माण के लिए स्थानीय पर्यावरण के अनुकूल सामग्री का उपयोग आदि। इसी प्रकार यूएई, सिंगापुर और चीन जैसे कई देशों ने नए शहरों को बसाने में ग्रीन बिल्डिंग मानदंड और विनियम निर्धारित किए हैं। इस प्रकार के नियमनों से शहरों को ज्यादा सस्टेनेबल और ईको-फ्रेंडली बनाया जा सकता है।

9. विभिन्न पुरस्कारों द्वारा सम्मान :- 1989 में शुरू किया गया 'यूएन-हैबिटेट स्क्रॉल ऑफ ऑनर पुरस्कार' दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित मानव बसाव संबंधित पुरस्कारों में से एक है। इसका उद्देश्य उन पहलों को एक पहचान देना है जिन्होंने मानव बसाव या शहरीकरण के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान दिया है। इसी प्रकार संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम द्वारा 'चैंपियंस ऑफ द अर्थ' तथा 'यंग चैंपियंस ऑफ द अर्थ' जैसे पुरस्कार प्रतिवर्ष

दिये जाते हैं। पुरस्कारों के माध्यम से न केवल वैज्ञानिक प्रयासों को पहचान मिलती है बल्कि नए शोधों एवं तकनीकों के बारे में जागरूकता भी फैलती है।

10. डिस्ट्रिक्ट हीटिंग और कूलिंग सिस्टम :- भौगोलिक परिवेश के अनुसार घर में हीटिंग या कूलिंग की व्यवस्था आज प्रत्येक आवास की आधारभूत आवश्यकता बन चुकी है। इस सिस्टम से ऊर्जा खपत के साथ-साथ लगातार ग्रीन हाउस गैसों का भी उत्सर्जन होता रहता है। अत: ऐसी स्थिति में डिस्ट्रिक्ट हिटिंग और कूलिंग सिस्टम की आवश्यकता सर्वाधिक है। इसके माध्यम से शहर के लिए एक केंद्रीकृत हीटिंग और कूलिंग सिस्टम की व्यवस्था करके इसे घर-घर तक डक्ट के माध्यम से पहुंचाया जाता है। यह पर्यावरण के दृष्टिकोण से काफी लाभदायक है।

राष्ट्रीय आवास बैंक का योगदान

राष्ट्रीय आवास बैंक अपनी विविध प्रतिबद्धताओं में कम आय वाले परिवारों के लिए आवास उपलब्ध करवाने, हरित आवास को अधिक किफायती बनाने, हरित तकनीकों का उपयोग करके घरों को पर्यावरण के अनुकूल बनाने आदि को महत्व देता है। इस ओर एक और कदम बढ़ाते हुए राष्ट्रीय आवास बैंक ने ए.एफ. डी और यूरोपीय संघ के साथ साझेदारी करके अगस्त 2017 में 'सनरेफ ग्रीन हाउसिंग इंडिया कार्यक्रम' का शुभारंभ किया है। इस कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य हैं:-

- आवास निर्माण क्षेत्र के पर्यावरण पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों को कम करना ।
- कुशल निर्माण-सामग्री के साथ हरित आवासीय घर के विकास को बढ़ावा देकर ऊर्जा और पानी के बिलों में बचत बढ़ाना ।
- भारत में हरित और किफायती आवास परियोजनाओं का विस्तार करना ।
- निम्न और मध्यम आय वर्ग के लोगों को किफायती हरित-आवास प्रदान करना ।

आधुनिक आवासीय आवश्यकताओं के साथ पर्यावरणीय सामंजस्य बिठाने की दिशा में राष्ट्रीय आवास बैंक के योगदान सराहनीय हैं। सभी संस्थाओं के ऐसे सामूहिक प्रयासों से ही कार्बन मुक्त विश्व बनाने का सपना साकार होगा।

यूएन-हैबिटेट एवं संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम का योगदान

संयुक्त राष्ट्र की पर्यावरण संबंधी गतिविधियों का नियंत्रण 'संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम' करता है। 'यूएन-हैबिटेट' जलवायु परिवर्तन को रोकने और इसके प्रत्याशित प्रभावों को समायोजित करने हेतु शहरी क्षेत्रों में आवश्यक कार्रवाइयों के लिए अभियान चला रहा है। यूएन-हैबिटेट के #ClimateAction4Cities अभियान का उद्देश्य शहर के विभिन्न समुदायों, निजी क्षेत्रों, शहरी पेशेवरों और आम जनता को जलवायु परिवर्तन जैसी भयावह वैश्विक समस्या के निदान के लिए प्रेरित करना है। वस्तुत: यह अभियान इस नवंबर में स्कॉटलैंड के ग्लासगो में होने वाले जलवायु परिवर्तन सम्मेलन (COP26) का हिस्सा है। 2021 में संयुक्त राष्ट्र के मुख्य लक्ष्यों में से एक है - 2050 तक कार्बन तटस्थता के लिए वैश्विक गठबंधन बनाना। इसी संदर्भ में यह अभियान हरित क्षेत्र बढ़ाने, कार्बन उत्सर्जन कम करने और प्रकृति-आधारित समाधानों पर केंद्रित है। यह अभियान सीधे तौर पर ग्लोबल अम्ब्रेला कैंपेन 'रेस टू जीरो' और 'रेस टू रेजिलिएंस' का समर्थन करता है। अंतरराष्ट्रीय भागीदारी व इस प्रकार के वृहद प्रयासों द्वारा कार्बन मुक्त विश्व बनाने हेतु उपयुक्त, आदर्श एवं प्रभावी रणनीतियाँ तैयार की जा सकती हैं।

निष्कर्ष

प्रकृति के विभिन्न अवयवों जैसे जल, वृक्ष आदि के माहात्म्य को तो हम पारंपरिक रूप से ही स्वीकार करते आए हैं। कहा भी गया है - "दशकूप समावापी, दशवापी समोह्नद्र:। दशह्नद सम: पुत्रों, दशपुत्रो समो द्रमु:।।" अर्थात दस कुओं के बराबर एक बावड़ी होती है, दस बावड़ियों के बराबर एक तालाब, दस तालाबों के बराबर एक पुत्र और दस पुत्रों के बराबर एक वृक्ष होता है। प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाकर ही मानव जीवन का सतत प्रवाह संभव है। अत: नई समस्याओं के लिए नए समाधानों को खोजना होगा और नई चुनौतियों के लिए नई रणनीतियां बनानी होंगी। ऊपर विस्तार से वर्णित है कि किस प्रकार मानदंडों का विकास, इनोवेटिव डिजाइन, ऊर्जा संरक्षण, अपशिष्ट प्रबंधन एवं पुनर्नवीकृत (रिसायकल्ड) सामग्रियों का उपयोग आदि एक सस्टेनेबल शहरी आवासीय परिवेश विकसित करने में मददगार हो सकते हैं। सभी को गुणवत्तापूर्ण सार्वजनिक आवास प्रदान करना आज सरकार के मुख्य लक्ष्यों में से एक है। ध्यान देने वाली बात केवल इतनी है कि जीवन स्तर के उत्थान की इस प्रक्रिया में पर्यावरणीय दृष्टिकोण से एक सस्टेनेबल मॉडल का अनुसरण किया जाए। अत: आवासीय क्षेत्र का विकास आधुनिक शहरी डिजाइन, वातावरण, स्थानीय आवश्यकताओं और पारंपरिक सामाजिक पहलुओं के आधार पर किया जाना चाहिए।

जी-20 स्थापना, स्वरूप एवं उद्देश्य

दिव्यांश मिश्रा
राजभाषा अधिकारी
प्रधान कार्यालय

चित्र साभार - g20.org से।

जी-20 यानि 'ग्रुप ऑफ ट्वेंटी' दुनिया के प्रमुख विकसित और विकासशील देशों की अर्थव्यवस्थाओं का एक मंच है। यह दुनिया की 20 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं का अंतरराष्ट्रीय समूह है जो संबंधित देशों के वित्त-मंत्री एवं केंद्रीय बैंकों के गवर्नर से मिलकर बना है। सरल शब्दों में कहा जाए तो जी-20 समूह दुनिया की 20 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं का समूह है जिसे दुनिया के आर्थिक एवं राजनीतिक मुद्दों पर विचार-विमर्श एवं आपसी सहयोग को बढ़ावा देने के लिए बनाया गया है। जी-20 समूह में 19 देश यथा अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, इटली, जापान, कोरिया, मैक्सिको, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, तुर्की, यूके, यूएसए और एक यूरोपीय संघ (EU) शामिल हैं। इन देशों के द्वारा विभिन मुद्दों पर विचार-विमर्श हेतु प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली वार्षिक बैठक को ही 'जी-20 शिखर सम्मेलन' के नाम से जाना जाता है।

जी-20 की स्थापना 25 सितंबर 1999 को अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन डीसी में की गई थी। इस सम्मेलन को एशिया में आए वित्तीय संकट के कारण अमेरिका के राष्ट्रपति द्वारा शुरू किया गया था। जी-20 समूह की पहली बैठक जर्मनी के बर्लिन शहर में आयोजित की गयी थी। वर्ष 2008 के वित्तीय संकट एवं दुनिया की सबसे बड़ी महामंदी के पश्चात इस फोरम की बैठक को शिखर सम्मेलन स्तर पर प्रतिवर्ष आयोजित किया जाने लगा। प्रतिवर्ष इस समूह द्वारा कुछ अन्य देशों को अतिथि देश के रूप में जी-20 शिखर वार्ता में आमंत्रित किया जाता है।

जी-20 समूह की स्थापना का मुख्य उद्देश्य वैश्विक अर्थव्यवस्था के विकास एवं वित्तीय एजेंडे के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना है। मुख्य रूप से वैश्विक अर्थव्यवस्था के संतुलन एवं स्थायित्व के लिए निर्मित जी-20 समूह द्वारा वैश्विक अर्थव्यवस्था के समग्र विकास हेतु विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की जाती है। साथ ही, इस समूह द्वारा वैश्विक अर्थव्यवस्था के अतिरिक्त अन्य अंतरराष्ट्रीय मुद्दों एवं समस्याओं पर विचार-विमर्श भी किया जाता है। जी-20 समूह में दुनिया के 20 शीर्ष अर्थव्यवस्था वाले देश शामिल किए गए हैं जो वैश्विक अर्थव्यवस्था का 90 फीसदी, वैश्विक व्यापार का 80 फीसदी एवं दुनिया की कुल आबादी का दो-तिहाई भाग कवर करते हैं। इस प्रकार से जी-20 समूह दुनिया के सबसे प्रभावशाली संगठनों में से एक है।

विश्व के अन्य समूहों की तरह जी-20 समूह का कोई भी स्थायी मुख्यालय नहीं है। ऐसे में प्रतिवर्ष जिस देश द्वारा जी-20 शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता की जाती है, वही देश अनौपचारिक रूप से मुख्यालय का कार्य करने लगता है। जी-20 समूह द्वारा प्रतिवर्ष सदस्य देशों में से ही रोटेशन के आधार पर अध्यक्ष देश का चुनाव किया जाता है एवं अध्यक्ष देश द्वारा ही जी-20 शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता की जाती है। बाली में आयोजित जी-20 बैठक दिनांक 16.11.2022 में भारत को वर्ष 2023 के लिए जी-20 समूह की अध्यक्षता सौंपी गयी है। ऐसे में वर्ष 2023 में होने वाले जी-20 शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता भारत द्वारा की जाएगी एवं यह सम्मेलन भारत में आयोजित किया जायेगा। वर्ष 2023 को अंतरराष्ट्रीय पोषक-अनाज वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। सरकार ने 'जी-20' में आने वाले विदेशी मेहमानों को परोसे जाने वाले भोजन की थाली में मोटे अनाज जैसे बाजरा, ज्वार, सावां, कोदो, रागी से बने व्यंजनों को शामिल करने की योजना बनायी है। इससे इन मोटे अनाज की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ब्रांडिंग भी होगी और सरकार यह भी सुनिश्चित करेगी कि न्यूनतम समर्थन मूल्य पर इन अनाजों की खरीद भी हो। इस प्रकार अंतरराष्ट्रीय एवं राज्य, दोनों स्तरों पर मोटे अनाज के उत्पाद की ब्रांडिंग होगी।

वर्तमान में जी-20 में 8 वर्कस्ट्रीम को शामिल किया गया है। इस स्ट्रीम में बुनियादी ढाँचा वित्तपोषण, वैश्विक समष्टि अर्थशास्त्र नीति, अंतरराष्ट्रीय वित्तीय आर्किटेक्चर, वित्तीय समावेशन, सस्टेनेबल वित्त, स्वास्थ्य वित्त, अंतरराष्ट्रीय कराधान, वित्तीय क्षेत्र में सुधार, वित्त ट्रैक, शेरपा ट्रैक को शामिल किया गया है। शेरपा ट्रैक की ओर से जी-20 प्रक्रिया का समन्वय सदस्य देशों के शेरपाओं द्वारा किया जाता है जो नेताओं के निजी प्रतिनिधि होते हैं। वित्त ट्रैक का नेतृत्व सदस्य देशों के वित्त मंत्री और सेंट्रल बैंकों के गवर्नर करते हैं। दो ट्रैक के भीतर, विषयगत रूप से उन्मुख कार्य-समूह हैं जिनमें सदस्यों के संबंधित मंत्रालयों के साथ-साथ आमंत्रित/अतिथि देशों और विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संगठनों के प्रतिनिधि भाग लेते हैं (वित्त ट्रैक मुख्य रूप से वित्त मंत्रालय के नेतृत्व में है)। ये कार्य-समूह प्रत्येक अध्यक्षता के पूरे कार्यकाल में नियमित बैठकें करते हैं। शेरपा वर्ष के दौरान हुई वार्ता का पर्यवेक्षण करते हैं, शिखर सम्मेलन के लिए कार्यसूची मदों पर चर्चा करते हैं और जी-20 के मूल कार्य का समन्वय करते हैं।

जी-20 की भारत की अध्यक्षता बहुपक्षीय व्यवस्था को पुनर्जीवित करने और फिर से केंद्रित करने का एक अवसर है। भारत को नई वास्तविकताओं का जवाब देने के लिए जी-20 को स्फूर्ति और ऊर्जा के साथ तैयार करना चाहिए, और इसे एक नए और मजबूत संस्थागत वास्तुकला के माध्यम से भविष्य के लिए तैयार बहुपक्षवाद पर्यावरण के निर्माण में सहायक बनाना चाहिए।

'जी20' के प्रतीक चिह्न को पहचानें

भारत को 'जी20' की अध्यक्षता (1 दिसंबर 2022 से 30 नवंबर 2023 तक) प्राप्त होने के उपलक्ष्य में माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा दिनांक 08 नवंबर 2022 को 'जी20' के लोगो एवं थीम का अनावरण किया गया। 'जी20' के लोगो में रोमन अक्षर 'G' के बाद अंक 2 एवं शून्य के स्थान पर कमल के पुष्प पर ग्लोब को दर्शाया गया है तथा उसके नीचे छोटे अक्षरों में भारत और इंडिया (रोमन लिपि में) के मध्य 2023 (वर्ष) अंकित है। इस लोगो में भारत का राष्ट्रीय पुष्प कमल आध्यात्मिकता, परिपूर्णता, संपन्नता, ज्ञान और प्रकाश का प्रतीक है। यह मन और मस्तिष्क की शुद्धता का भी प्रतिनिधित्व करता है। यह निरंतरता का आदर्श प्रतीक है। डिजाइन में कमल के पुष्प की सात पंखुड़ियाँ दर्शाई गई हैं, जो 'जी20 भारत 2023' में सात सागरों और सातों महाद्वीपों के एक मंच पर आने को दर्शाती हैं। यह सम्पूर्ण विश्व को एक संगठित परिवार मानने वाली भारत की धारणा को भी परिलक्षित करता है।

'जी20' की थीम के रूप में हिन्दू ग्रंथ से उद्धृत संस्कृत सूक्ति "वसुधैव कुटुम्बकम्" को लिया गया है जो बताती है कि "विश्व एक परिवार है" अर्थात् पृथ्वी पर सभी जीव बंधु-बांधव हैं। "वसुधैव कुटुम्बकम्" भारत के 'जी20' की अध्यक्षता का मूल मंत्र है। "वसुधैव कुटुम्बकम्" के नीचे अंग्रेजी में "वन अर्थ • वन फैमिली • वन फ्यूचर" अंकित है जो इस थीम के अंग्रेजी तात्पर्य को अभिव्यक्त करता है। आइए इस लोगो और थीम की भावना को आत्मसात करें।

भारत की शास्त्रीय भाषाएँ

षीबा एस आर
प्रबंधक (राजभाषा)
आंचलिक कार्यालय
एरणाकुलम अंचल

इदमन्धं तम: कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्।
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते।।

यदि शब्द रूपी ज्योति से संसार प्रदीप्त न होता तो इन तीनों लोकों में अंधकार व्याप्त हो जाता!!!!!!!

भारत दुनिया की सबसे श्रेष्ठ एवं भाषायी विविधता में भी एकता रखने वाला राष्ट्र है। भारत की भाषायी विविधता की पहचान और सम्मान करते हुए संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को सम्मिलित किया गया है। कुछ भारतीय भाषाओं की प्राचीन साहित्यिक परंपरा का संरक्षण और संवर्द्धन करने के लिये केंद्र सरकार द्वारा उन्हें 'शास्त्रीय भाषा' का दर्जा प्रदान किया जाता है।

शास्त्रीय भाषा की परिभाषा:-

शास्त्रीय भाषा ऐसी भाषा होती है जिनका कम से कम 1500-2000 वर्ष पुराना इतिहास हो, साहित्य/ग्रंथों एवं वक्ताओं की प्राचीन परंपरा हो और साहित्यिक परंपरा का उद्भव दूसरी भाषाओं से न हुआ हो।

शास्त्रीय भाषा हेतु मानदण्ड:-

- उस भाषा में लिखित आरंभिक ग्रंथों का इतिहास लगभग 1500-2000 वर्ष पुराना होना चाहिए।
- संबंधित भाषा में प्राचीन साहित्य/ ग्रंथों का एक ऐसा समूह होना चाहिए, जिसे उस भाषा को बोलने वाली पीढ़ियाँ अमूल्य विरासत के रूप में स्वीकार करती हों।
- उस भाषा की अपनी मौलिक साहित्यिक परंपरा होनी चाहिए, जो किसी अन्य भाषिक समुदाय से न ली गई हो।
- शास्त्रीय भाषा और उसका साहित्य, आधुनिक भाषा और साहित्य से भिन्न है, इसलिए शास्त्रीय भाषा और उसके परवर्ती रूपों में विच्छिन्नता हो सकती है।

भारत की शास्त्रीय भाषाओं की सूची

1. तमिल

यह द्रविड़ भाषा परिवार की प्राचीनतम भाषा मानी जाती है। विश्व के विद्वानों ने संस्कृत, ग्रीक, लैटिन आदि भाषाओं के समान तमिल को भी अति प्राचीन तथा सम्पन्न भाषा माना है। यह भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में सूचीबद्ध 22 अनुसूचित भाषाओं में से एक है। तमिल भाषा भारत सरकार द्वारा 2004 में एक शास्त्रीय भाषा के रूप में घोषित की जाने वाली पहली भारतीय भाषा है। तमिल भाषा का साहित्य अत्यन्त पुराना है। भारत में संस्कृत के अलावा तमिल का साहित्य ही सबसे प्राचीन साहित्य है। तमिल भाषा का प्राचीन रूप या संघ तमिल शास्त्रीय साहित्य का आधार है। इस भाषा के औपचारिक और प्राचीन साहित्य शैली को 'सेंतमिल' कहा जाता है। आधुनिक साहित्य और बोलचाल की भाषा के रूप का आधार है 'कोडुंतमिल'।

2. संस्कृत

संस्कृत भाषा 'देववाणी' कहलाती है। यह न केवल भारत की महत्त्वपूर्ण भाषा है, अपितु विश्व की प्राचीनतम व श्रेष्ठतम भाषा मानी जाती है। यह भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में सूचीबद्ध 22 भाषाओं में से एक है। भारत सरकार ने 2005 में इस भाषा को 'भारत की शास्त्रीय भाषा' का दर्जा दिया था। संस्कृत में मानव जीवन के लिए उपयोगी चारों पुरुषार्थों यथा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का विवेचन बड़े ही विस्तार से किया गया है। प्राचीनता, अविच्छिन्नता, व्यापकता, धार्मिक व सांस्कृतिक मूल्य तथा कलात्मक दृष्टि से ही नहीं, अपितु धर्म व दर्शन के विचारात्मक अध्ययन की दष्टि से भी संस्कृत भाषा का अपना निजी महत्त्व है। संस्कृत भाषा एक विश्वव्यापी भाषा है।

3. तेलुगु

तेलुगु भाषा द्रविड़ परिवार की भाषा है और भारत के आंध्रप्रदेश एवं तेलंगाना राज्य की सरकारी भाषा है। तेलुगु की सात भिन्न क्षेत्रीय बोलियाँ तथा तीन सामाजिक बोलियाँ यथा ब्राह्मण, अब्राह्मण और हरिजन हैं जो औपचारिक या साहित्यिक भाषा बोलियों से भिन्न हैं। इस स्थिति को जनद्विभाषिता कहा

जाता है। तेलुगु के तीन नाम प्रचलित हैं - 'तेलुगु', 'तेनुगु' और 'आंध्र'। यह भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में सूचीबद्ध 22 भाषाओं में से एक है। भारत सरकार ने 2008 में इस भाषा को 'भारत की शास्त्रीय भाषा' के रूप में मान्यता प्रदान की थी। तेलुगु भारत में चौथी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से है और इसे 'इटालियन ऑफ द ईस्ट' कहा जाता है क्योंकि 16वीं शताब्दी के इटालियन यात्री निकोल डी कोंटी ने पाया कि तेलुगु भाषा इटालियन भाषा की तरह ही स्वरों के साथ समाप्त होती है। इंटरनेशनल अल्फाबेट एसोसिएशन ने 2012 में भाषा की लिपि को दुनिया में दूसरी सर्वश्रेष्ठ लिपि के रूप में चुना।

4. कन्नड़

यह भारत के कर्नाटक राज्य में बोली जाने वाली भाषा तथा कर्नाटक की राजभाषा है। इसे पूरी दुनिया में सबसे अधिक बोली जाने वाली सत्ताईसवीं भाषा होने का दर्जा मिला है। यह द्रविड़ भाषा-परिवार में आती है पर इसमें संस्कृत के भी बहुत से शब्द हैं। कन्नड़ भाषी लोग इसको 'सिरिगन्नड' कहते हैं। यह भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में सूचीबद्ध 22 भाषाओं में से एक है। भारत सरकार ने 2008 में इस भाषा को 'भारत की शास्त्रीय भाषा' का दर्जा दिया था। आधुनिक कन्नड़ भाषा और साहित्य भारत में सबसे अधिक समृद्ध है। यहां तक कि सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार अर्थात् ज्ञानपीठ पुरस्कार कन्नड़ लेखकों को उनकी कृतियों के लिए कई बार दिए गए हैं। वास्तव में यह सम्मान भारत की किसी भी भाषा के लिए सबसे प्रतिष्ठित है।

5. मलयालम

मलयालम भाषा दक्षिण भारतीय राज्य केरल और भारत के पश्चिमी तट में लक्षद्वीप द्वीप समूह की मूल भाषा है। यह द्रविड़ भाषा-परिवार के अन्तर्गत आती है। यह भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में सूचीबद्ध 22 भाषाओं में से एक है। भारत सरकार ने 2013 में इस भाषा को 'भारत की शास्त्रीय भाषा' की सूची में शामिल किया था। यद्यपि यह सच है कि मलयालम मलयाली लोगों की भाषा है। इसे बोलने वाले लोगों का समूह दुनिया में बहुत सीमित हो गया है। इस भाषा के दुनिया भर में प्रसार के उद्देश्य से केरल सरकार ने अपने संस्कृति विभाग के अंतर्गत मलयालम मिशन की शुरुआत की। मलयालम की प्राचीनतम लिपि 'वट्टेळुत्तु लिपि' 9वीं शताब्दी से उपयोग की जाने वाली लिपि थी, पर मलयालम भाषा की आधुनिक लिपि 'ग्रंधा लिपि' से विकसित हुई, जो 16 वीं शताब्दी तक अस्तित्व में आई। आज मलयालम लगभग 38 मिलियन लोगों द्वारा बोली जाती है।

6. ओडिया

यह आधुनिक भारत-आर्य भाषा परिवार के अन्तर्गत आती है। इसकी लिपि का विकास भी नागरी लिपि के समान ही ब्राह्मी लिपि से हुआ है। यह भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में सूचीबद्ध 22 भाषाओं में से एक है। भारत सरकार ने 2014 में इस भाषा को 'भारत की शास्त्रीय भाषा' के रूप में सूचीबद्ध किया था। ओडिया भाषा में कई बोलियां हैं जिनमें मुगलबंदी (तटीय ओडिया) मानक बोली और शिक्षा की भाषा है। इंडो-आर्यन परिवार के पूर्वी समूह में सबसे पुराना रूप, ओडिया भाषा अर्धमागधी प्राकृत से लिया गया है। पहला काव्य या साहित्य 15 वीं शताब्दी में रचा गया था और साहित्यिक गद्य ने 18 वीं शताब्दी में आकार लेना शुरू कर दिया था।

शास्त्रीय भाषा को प्राप्त लाभ

शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त होने के पश्चात् केंद्र सरकार उक्त भाषा को निम्नलिखित लाभ प्रदान करती है:

- संबंधित भाषा के प्रतिष्ठित विद्वानों को प्रतिवर्ष दो बड़े सम्मान देने की व्यवस्था।
- उस भाषा में अध्ययन के लिये उत्कृष्ट केंद्रों की स्थापना।
- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से आग्रह कर आरंभिक तौर पर केंद्रीय विश्वविद्यालयों में संबंधित भाषा में विशेषज्ञता प्राप्त प्रतिष्ठित शोधार्थियों के लिये शास्त्रीय भाषा की कुछ सीटें आरक्षित करवाना।
- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग इन भाषाओं को बढ़ावा देने के लिये अनुसंधान परियोजनाएँ भी संचालित करता है।

भारत में शास्त्रीय भाषाओं का अपना स्वतंत्र साहित्य और प्राचीन परंपराएँ हैं। उनमें वर्षों में विभिन्न प्रकार के संशोधन आए हैं। इस काल की भाषाएँ साहित्य के स्वर्ण काल का गठन करती हैं। शास्त्रीय भाषाओं को जानने और अपनाने से विश्व स्तर पर भाषा को पहचान और सम्मान मिलेगा। शास्त्रीय भाषाओं की जानकारी से लोग अपनी संस्कृति को और बेहतर तरीके से समझ सकेंगे तथा प्राचीन संस्कृति और साहित्य से और बेहतर तरीके से जुड़ सकेंगे।

एक सर्जिकल स्ट्राइक ऐसी भी..

राजेश सिंह
सहायक महाप्रबंधक
एस एम ई सी सी
हजारीबाग अंचल

पॉइंट 5355 से सटी सरहद के उस पार बहुत सारे टारगेट्स थे। मतलब बहुत सारे आतंकी ठिकाने। एक ऐसा ही आतंकी ठिकाना साम्बा सेक्टर में सुचेतगढ़ बॉर्डर आउटपोस्ट के करीब था।

सन् 2008 की मध्यरात्रि को एक सर्जिकल स्ट्राइक हुई थी। स्थान था सुचेतगढ़ अंतरराष्ट्रीय सीमा के पास। इंटेलिजेंस ने अलर्ट जारी किया था कि सीमा पार से कुछ आतंकी आकर वहां छुपे हैं। सूचना मिलते ही हमारे कमांडर इन चीफ कर्नल समरजीत फ़ौरन सक्रिय हो गए और अपने जवानों को तुरंत हमले के लिए तैयार होने का आदेश दिया। मध्यरात्रि का वक़्त था, इसलिए दुश्मन को हमारी पोजीशन का आसानी से पता चलना मुश्किल था, फिर भी कर्नल साहब ने अपने सैन्य अनुभव एवं कौशल का परिचय देते हुए अपने जवानों को पॉइंट 5355 से पोजीशन लेने का आदेश दिया, ताकि दुश्मन को हमारी ज़रा सी भी भनक न लगे। उन्होंने अपने सबसे योग्य एवं अनुभवी ऑफिसर मेजर खान को भी इस ऑपरेशन में शामिल किया। मेजर खान जिन्होंने बहुत सारे ऑपरेशन्स को लीड किया था, वे इस ऑपरेशन में सेकंड इन कमांड की भूमिका में थे। कैप्टन केके जिन्होंने मूल रूप से सिग्नल्स में कमीशन प्राप्त करने के बाद सफलतापूर्वक कमांडो कोर्स पूर्ण किया था तथा छापामार और गुरिल्ला वारफेयर में महारत हासिल की थी, वे भी इस महत्वपूर्ण एवं खतरनाक ऑपरेशन में शामिल थे। सूबेदार मेजर भड़ाना जो दुश्मन को गोलियों की जगह अपनी हाथों से ही मारने में सक्षम थे, वे भी इस अभियान का हिस्सा थे। मध्यरात्रि हमला शुरू हुआ और दुश्मन जो हमारी पोजीशन से बिलकुल अनजान था, उसे ज़रा भी सँभलने का मौका नहीं मिला। एक के बाद एक जबरदस्त हमले। अपनी पोजीशन मज़बूत होते देख कैप्टन केके ने अपने बंकर से बाहर निकल कर बिलकुल रेंगते हुए दुश्मन के सामने आकर आखिरी हमला किया। दुश्मन जो कि इस हमले के लिए बिलकुल तैयार नहीं था, उसका मनोबल पूर्ण रूप से टूट चुका था। दुश्मन बिल्कुल धरासायी हो चुका था और भागने पर मज़बूर भी। आतंकी ठिकाना तबाह हो चुका था और कोई हताहत भी नही हुआ। ऑपरेशन पूरी तरह से सफल रहा। हमने अपनी सैन्य एवं अंतरराष्ट्रीय सीमा का बिल्कुल उल्लंघन नहीं किया और सफलतापूर्वक इस सर्जिकल स्ट्राइक को अंजाम दिया। ये ऐसी सर्जिकल स्ट्राइक थी जिसकी प्रमाणिकता के ऊपर न ही आज तक कोई संदेह किया गया और न ही कोई सबूत माँगा गया। इस अभियान में शामिल वीर जवानों को वीरता पदक से सम्मानित किया गया।

हालाँकि मैंने इस पूरे ऑपरेशन का जीवंत चित्रण करने का पूर्ण प्रयास किया है, फिर भी इस अभियान में शामिल कुछ वीर जवानों का उल्लेख नहीं कर पाया हूँ जिसके लिए क्षमाप्रार्थी हूँ। अरे हाँ, मैं जो एक नया रंगरूट था, इस पूरे अभियान में रेडियो ऑपरेटर की भूमिका में था और दुश्मन के मैसेज को इंटरसेप्ट करने के साथ-साथ अपने बेस कैंप को वायरलेस पर इस अभियान की पूरी जानकारी दे रहा था। आज भी इस ऑपरेशन को याद करके रोमांचित हो उठता हूँ। नमन है 5355 अभियान के ऐसे वीर सैनिको को 🙏.

नोट : - सभी पात्र काल्पनिक हैं।

चित्रकूटः रामायण का आध्यात्मिक पड़ाव

अखिल सीतारमन गुप्ता
लिपिक
मुंबई एनआरआई शाखा

चित्रकूट, विंध्य के उत्तरी क्षेत्रों में शांति से बसा हुआ है जो शांत वन, नदियों व धाराओं का स्थान है और जहां शांति और प्राकृतिक सौंदर्य सर्वव्यापी है। प्रकृति का सबसे प्यारा उपहार भी यह पवित्र भूमि है जिसे देवताओं ने आशीर्वाद दिया है और तीर्थयात्रियों के विश्वास ने पवित्र किया है। चित्रकूट की आध्यात्मिक विरासत पौराणिक युग तक फैली हुई है। यह शहर महान धार्मिक ग्रंथ रामायण के साथ संबंध के लिए जाना जाता है। यह उन गहरे जंगलों में था जहाँ भगवान राम, देवी सीता और लक्ष्मण जी ने अपने चौदह वर्षों के वनवास में से ग्यारह वर्ष बिताए थे। यहाँ महान ऋषि अत्रि और सती अनुसूया ने ध्यान किया था; और यहीं पर हिंदू देवताओं की प्रमुख त्रिमूर्ति दत्तात्रेय ने अपना अवतार लिया था। पीड़ितों, साधकों, कवियों और दूरदर्शी महानुभावों ने प्राचीन काल से जिसकी उदात्त प्राकृतिक सुंदरता से प्रेरणा ली, जिसके शांत मंदिरों से आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त की और बदले में पवित्र कथा का हिस्सा बन गए, वह चित्रकूट ही है। यह मध्यप्रदेश राज्य के सतना जिले और उत्तर प्रदेश राज्य के चित्रकूट जिले के बीच सांस्कृतिक और पुरातात्विक रूप से महत्वपूर्ण शहर है। हालांकि पर्यटकों के लिए अपेक्षाकृत अज्ञात है। चित्रकूट दिव्यता, शांति और प्राकृतिक सुंदरता का एक आदर्श मिश्रण है।

कैसे पहुंचा जाए -

- **वायु मार्ग द्वारा:** निकटतम हवाई अड्डा खजुराहो (175 किमी) है।
- **रेल मार्ग द्वारा:** निकटतम रेलवे स्टेशन झांसी-मानिकपुर लाइन पर चित्रकूट धाम-करवी (11 किलोमीटर) है।
- **सड़क मार्ग से:** नियमित बस सेवाएं चित्रकूट को झांसी, महोबा, चित्रकूटधाम-कर्वी, हरपालपुर, सतना और छतरपुर से जोड़ती हैं।

सर्वश्रेष्ठ मौसम: अक्टूबर से मार्च

क्या देखें ?

रामघाट: मंदाकिनी नदी के किनारे पर स्थित घाट धार्मिक गतिविधियों की निरंतर गतिशीलता और बहुरूपता की प्रतीत कराते हैं। यहां भजनों के उच्चारण और अगरबत्ती की मीठी सुगंध के बीच भगवा वस्त्र में साधु मौन ध्यान में बैठते हैं या

यहां आने वाले अनगिनत तीर्थयात्रियों को अपने ज्ञान का सहारा देते हैं। भोर की पहली किरण के साथ, जो नदी पर चमकती है, रामघाट जीवन में हलचल मचाता है क्योंकि सभी उम्र के भक्त अनुष्ठान करते हैं, पानी में डुबकी लगाते हैं और देवताओं का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। डूबता हुआ सूरज 'मन्दाकिनी आरती' को चुनता है और गहराती हुई शाम अपनी मधुर ताल से आध्यात्मिक व रमणीय दृश्य भर देती है। हर समय रामघाट एक गहरी और स्थायी आस्था का गवाह है जो चित्रकूट की पवित्रता का सम्मान करने वाले अनुष्ठानों में अभिव्यक्ति पाता है। मंदाकिनी के लहरदार नीले हरे पानी को नावों द्वारा पार किया जा सकता है जो शाम की आरती के दौरान सबसे अच्छे आकर्षणों में से एक है।

"चित्रकूट के घाट पर, भई संतन की भीर,
तुलसीदास चंदन घिसे, तिलक करे रघुवीर।"

स्वामी मत्यगजेन्द्र नाथ शिव मंदिर: मंदाकिनी के किनारे रामघाट पर प्रसिद्ध प्राचीन मत्यगजेन्द्र नाथ शिव मंदिर है जिसमें

स्थापित शिवलिंग की महिमा का वर्णन शिवपुराण में भी मिलता है। मान्यता है कि इस मंदिर में स्थापित शिवलिंग की स्थापना स्वयं भगवान ब्रह्मा ने अपने हाथ से की थी। कहा जाता है कि भगवान ब्रह्मा ने इसी स्थान पर यज्ञ किया था। यज्ञ के प्रभाव से निकले शिवलिंग को स्वामी मत्यगजेन्द्र नाथ के नाम से जाना जाता है।

कामदगिरि: कामदगिरि, जो मूल चित्रकूट है, प्रमुख धार्मिक महत्व का स्थान है। यह एक संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ है - "वह जो सभी इच्छाओं को पूरा करता है"। इस पहाड़ी के चारों ओर एक तीर्थ मार्ग है जिसकी दूरी लगभग 5 किमी है। भक्तों का मानना है कि सभी तीर्थ या पवित्र स्थान, धार्मिक मार्ग के किनारे स्थित हैं। चित्रकूट के प्रमुख देवता भगवान कामतानाथ हैं। मुख्य मंदिर के अलावा यहां भगवान कामतानाथ को समर्पित कई मंदिर हैं। इस मंदिर से जुड़ी कई पौराणिक किंवदंतियां हैं। उनमें से एक के अनुसार कामदगिरि पर्वत को सबसे अधिक महत्व दिया जाता है क्योंकि यहीं पर भगवान ब्रह्मा ने सृष्टि के निर्माण से पहले यज्ञ किया था।

"कामद भे गिरि राम प्रसादा।
अवलोकत अपहरत बिषादा।।"

राम के पवित्र अवतार के रूप में आज इनकी पूजा की जाती है। भरत मिलाप मंदिर भी यहां स्थित है। कहा जाता है कि भरत ने अयोध्या के सिंहासन पर लौटने के लिए राम से भेंट की थी। कई श्रद्धालु ऐसे हैं जो आशीर्वाद मांगने के लिए पवित्र पहाड़ी की परिक्रमा करते हैं।

जानकी कुंड: रामघाट से ऊपर की ओर मंदाकिनी का एक शांत सुंदर खिंचाव है। नदी के पानी का स्वर गहरे नीले आकाश की छतरी में एक मधुर प्रतिध्वनि पाता है। शाब्दिक रूप से 'जानकी कुंड' का अर्थ है 'सीता का कुंड'। एक पौराणिक कथा के अनुसार यह अपने पति भगवान राम के साथ वनवास

के वर्षों के दौरान सीता का पसंदीदा स्नान स्थल था। कहा जाता है कि यहां की चट्टानों पर देवी सीता के पदचिह्न अंकित हैं। ये जगह रोजमर्रा की दुनिया की हलचल से अलग है।

सती अनुसूया आश्रम: सती अनुसूया आश्रम चित्रकूट के प्रसिद्ध पर्यटन आकर्षण रामघाट से लगभग 18 किमी की दूरी पर स्थित है। यह इस क्षेत्र के सबसे पवित्र स्थानों में से एक है। सती अनुसूया को अपने धर्मनिष्ठ, शुद्ध और पवित्र आचरण के कारण

हिंदू धर्म के पवित्र ग्रंथों में महासती के रूप में भी माना जाता है। उनके नाम के पीछे भी एक दिलचस्प कहानी है। ऐसा माना जाता है कि दस वर्षों तक वर्षा न होने के कारण यह क्षेत्र सूख गया था। तब अनसूया ने कठिन तपस्या की और अंत में मंदाकिनी नदी को पृथ्वी पर लाने में सफल रहीं। अपने सर्वोच्च बलिदान और अपनी तपस्या के दौरान अपार कष्टों को सहने के लिए उन्हें 'सती' कहा जाता था। वास्तव में अपने पति और अपने कर्तव्यों के प्रति उनका समर्पण और प्रेम इतना महान था कि देवी सीता ने भी भगवान राम के साथ वनवास के दौरान उनसे आशीर्वाद मांगा था।

आश्रम चारों ओर से घनी वनस्पतियों और पहाड़ियों से घिरा हुआ है। यहाँ महासती अनसूया, उनके पति महर्षि अत्रि और उनके पुत्र दत्तात्रेय को समर्पित एक विशाल मंदिर है। मंदिर के

अंदर तीनों की मूर्तियों के अलावा सती के जीवन के चित्रण हैं जो इसे सौंदर्यपूर्ण बनाते हैं। इसके अलावा अर्जुन के साथ रथ पर सवार भगवान कृष्ण की एक मूर्ति भी है।

स्फटिक शिला: स्फटिक शिला वास्तव में दो विशाल शिलाखंड हैं जिनके बारे में माना जाता है कि इनमें भगवान राम और देवी सीता के पैरों के निशान हैं।

गुप्त-गोदावरी: सड़क मार्ग से शहर से 18 किमी दूर एक पहाड़ी के ऊपर स्थित एक प्राकृतिक आश्चर्य है। यह आश्चर्य गुफाओं की एक जोड़ी है। इन गुफाओं में से एक 'सीताकुंड' के

नाम से पहचाने जाने वाला एक तालाब है जो पानी की एक छोटी सी धारा द्वारा निरंतर पोषित होता है। ये गुफाएँ पानी की चलने वाली धारा के साथ लंबी और संकरी है। ऐसा माना जाता है कि राम और उनके भाई लक्ष्मण ने बाद की गुफा में दरबार लगाया जिसमें सिंहासन जैसी दो प्राकृतिक चट्टानें हैं।

हनुमान धारा: एक खड़ी पहाड़ी पर कई सौ फीट ऊपर चट्टान पर एक झरना है। कुछ पर्यटक इस स्थान को इसलिए याद करते हैं कि यह चित्रकूट का मनोरम दृश्य प्रस्तुत करता है। यहाँ एक विशाल पीपल के पेड़ की छाया में एक खुला एवं पक्का क्षेत्र है जो लंबी चढ़ाई के बाद एक सुंदर पड़ाव के रूप में आता है।

भरत कूप: भरत कूप वह जगह है जहाँ भरत ने भारत के सभी तीर्थ स्थानों से एकत्रित पवित्र जल का संग्रहण किया था। यह शहर से कुछ किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक छोटा सा स्थान है।

दीपदान उत्सव: चित्रकूट में रामघाट पर दीपदान होने पर एक अद्भुत नजारा देखने को मिलता है। कार्तिक के पवित्र महीने के दौरान, विशेष रूप से दीपावली के अवसर पर मंदाकिनी नदी के तट पर बड़ी संख्या में भक्तों की भीड़ उमड़ती है। वे दीपदान करके पूजा करते हैं जिसे 'दीपदान' के नाम से जाना जाता है। प्रत्येक अमावस्या पर लाखों लोग इन स्थलों पर एकत्रित होते हैं। सोमवती अमावस्या, दीपावली, शरद-पूर्णिमा, मकर संक्रान्ति और रामनवमी ऐसे समागम और उत्सवों के विशेष अवसर हैं।

राम दर्शन: यह एक संग्रहालय है। आप इसे एक मंदिर भी मान सकते हैं। यह चित्रकूट के सबसे लोकप्रिय पर्यटन आकर्षणों में से एक है जो आध्यात्मिक अनुभव प्रदान करता है। राम दर्शन संग्रहालय का प्रबंधन दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा किया जाता है। इसमें हिंदू पौराणिक महाकाव्य रामायण की विभिन्न घटनाओं का कलात्मक चित्रण है। विभिन्न प्रसंगों को मूर्तियों, नक्काशियों और चित्रों के माध्यम से दर्शाया गया है। इसके अलावा, इंडोनेशिया, थाईलैंड, जापान और कोरिया जैसे विभिन्न देशों के दृष्टिकोण से भी रामायण का चित्रण किया गया है। इन चित्रणों में रंगीन मुखौटे और परिधान भी शामिल हैं जो उन देशों में उपयोग किए जाते हैं।

"सुवर्ण कूटम रजताभि कूटम,
माणिक्य कूटम मणिरत्न कूटम,
अनेक कूटम बहुवर्ण कूटम,
श्री चित्रकूटम शरणम प्रपद्ये।।"

इतिहास के पन्नों से .....

रत्नागिरी अपने खूबसूरत समुद्री तटों के साथ साथ लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की जन्मभूमि तथा वीर सावरकर की कर्मभूमि के रूप में प्रसिद्ध है। परंतु इस जगह को अंग्रेजों ने अपने रास्ते के पत्थर अर्थात अपने विरोधियों को नज़रबंद रखने के लिए चुना था। सुदूर ब्रह्मदेश या बर्मा (अब म्यांमार) के राजा थे थिबा मिन। वे बौद्ध धर्म के अनुयायी थे। अंग्रेजों ने अपनी विस्तारवादी नीति में बाधक होने के कारण राजा को बर्मा से रत्नागिरी लाकर नज़रबंद कर दिया था।

रत्नागिरी स्थित थिबा महल अंग्रेजों द्वारा ब्रह्मदेश या बर्मा (अब म्यांमार) के राजा थिबा मिन के लिए बनाया गया था। इस महल का निर्माण 1906 में आरंभ हुआ। उस समय इस महल को बनाने में 1.25 लाख रुपए खर्च हुए थे। 1910 से 1916 तक राजा अपनी रानी के साथ यहाँ रहते थे तथा वर्ष 1916 में इसी महल में उनका देहांत हुआ था। अब इस महल में एक क्षेत्रीय संग्रहालय बनाया गया है। राजा थिबा मिन द्वारा उपयोग की जाने वाली कुछ वस्तुएं अभी भी इस महल में संरक्षित हैं। महल ढलान वाली छतों के साथ खूबसूरती से निर्मित तीन मंजिला संरचना है। खूबसूरत नक्काशी वाली अर्धवृत्ताकार लकड़ी की खिड़कियां इस संरचना का मुख्य आकर्षण हैं। पहली मंजिल पर मार्बल फ्लोर वाला एक डांसिंग हॉल है। महल के पीछे की ओर बुद्ध की एक मूर्ति स्थापित है। इस मूर्ति को राजा थिबा भारत लेकर आए थे। इस महल का कुछ हिस्सा संरक्षित है। कहा जाता है कि इस महल के निर्माण में राजा ने स्वयं रुचि ली थी तथा व्यक्तिगत रूप से देखभाल की थी।

बेटी

परार्इ नहीं समझा मुझे, लड़की की जात जानकर,
दिल खुश है माँ पापा, ये तुम्हारा एहसान मानकर।

इतना ही नहीं, बहुत-सी तुमने हमारे लिए जोड़ी है कमाई,
आज के जमाने में भला, तुमने अपनी दो-दो बेटी हैं पढ़ाई।

पढ़ाई दी, कपड़े दिए, खाना दिया खाने को,
अब थोड़ा सा ज्ञान मेरा, पापा काम आने दो।

फूल से हैं हम भले ही, लेकिन नाजुक नहीं हैं,
एक बार तो आजमा लो पापा, हम तुम्हारे चाबूक हैं।

कमजोर समझकर अपने आपको, तुम गैरों में बैसाखी ढूंढते रहे,
पर हम यहाँ सहारा देने, माँ पापा तुम्हीं को ढूंढते रहे।

एक बार फिर से पापा, समझदार बन जाओ ना,
बेटे की शक्ल वाली बेटी को मान जाओ ना।

लड़का कम नहीं है लड़की से, ये तो हम मानते हैं,
लड़कियां भी लड़का बन सकती हैं, क्या आप ये जानते हैं।

एक बार, बस एक बार, पापा मौका तो दे दो,
जी खोलकर एक बार पंख तो दे दो।
उड़ उड़कर सारी खुशियाँ पास तुम्हारे लाऊंगी,
बेटी बनकर आई हूं, बेटा बनकर जाऊंगी।

बेटी हूं आपकी, पर कुछ मुश्किलें हैं जिन्दगी में,
कभी छुपा लेती हूं गम, दिल के किसी कोने में।

कभी मैं रोती नहीं, लाख दुख आने पर भी,
और कभी यूं ही आँसू बहाने को दिल करता है।

स्वाति खेमराज मेहरे
लिपिक
सीपीपीसी
नागपुर

अच्छा-बुरा स्वयं में कुछ नहीं, हमारे विचार ही हमें अच्छा-बुरा बनाते हैं।

अमरेंद्र कुमार अमर
वरिष्ठ प्रबंधक
कोल्हापुर अंचल

संत कवि (तुलसीदास) ने लिखा है-

"जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।"

यानी जिसकी जैसी सोच होगी, वैसा ही वह अपने प्रभु में देखेगा। एक भला आदमी अपने आराध्य में अच्छे गुण तलाश करेगा और उनकी पूजा करेगा। इसके विपरीत एक बुरा आदमी अपने मुताबिक गुण अपने प्रभु में देखना पसंद करेगा। कुछ वैसा ही, जैसे शरद ऋतु के पूर्व जब आसमान में बादल तमाम तरह की आकृतियाँ बनाते-बिगाड़ते हैं, तब मनुष्य इन बादलों में अपनी-अपनी रुचि के अनुरूप आकार देखता है। अच्छा या बुरा होना तो मनुष्य की मानसिकता है। एक अच्छा शोध भी अगर गलत हाथों में पड़ जाए तो वह उससे विनाश की ही बात सोचेगा और अच्छे हाथों में पड़ जाए तो वह उसका सकारात्मक और रचनात्मक इस्तेमाल करेगा।

हिंसक प्रवृत्ति का आदमी अपनी प्रवृत्ति का त्याग नहीं कर पाता और अपने स्वभाव के अनुरूप वह हर आविष्कार में यही ढूंढता है। इसीलिए महात्मा गांधी ने स्वाधीनता की लड़ाई लड़ते वक्त अहिंसा पर जोर दिया था। अहिंसा का मतलब सिर्फ जीव के प्रति दया नहीं, बल्कि अपने बुरे स्वभाव पर भी काबू पाना है। इसे यूँ कहा जा सकता है कि हिंसा का अभाव ही अहिंसा है। किसी भी प्राणी को किसी तरह का कष्ट न पहुँचाना ही अहिंसा है और यह अहिंसा तब ही आएगी जब मनुष्य के स्वभाव में ही हिंसा का अभाव होगा। सवाल यह है कि हिंसा का भाव मनुष्य के मन में आता ही क्यों है? हिंसा का मूल स्त्रोत है- राग-द्वेष और मनुष्य की अनियंत्रित वासनाएँ। वासना यानी कि जगत और प्रकृति से अपरिमित सुख पाने की लालसा और इस चक्कर में वह प्रकृति का दोहन करता है और जगत की हर चीज़ पर नियंत्रण पाना चाहता है। इस वजह से उसके अंदर दूसरों से छीनने या हड़पने की ललक बढ़ती है। पशु की वासनाएँ सीमित हैं। वह बस आहार, निद्रा और काम तक सीमित है, इसलिए उसकी वासनाएँ बस प्राकृतिक हैं और उसकी मांग भी।

हालाँकि एक बार अगर मनुष्य सहज जीवन या अच्छे विचारों वाला जीवन अपना ले तो उसे फिर कभी बुरे मार्ग पर चलने का प्रयास नहीं करना पड़ेगा, क्योंकि बुरे मार्ग पर चलने के लिए निरंतर बुरा सोचना पड़ता है, जबकि अच्छे और सहज विचारों के मार्ग पर चलने के लिए सायास उपाय नहीं करने पड़ते। लोक स्वभाव की इस प्रवृत्ति पर नियंत्रण पाना आसान नहीं। पहले तो मनुष्य को अच्छे गुणों के लिए प्रयास करना पड़ेगा और एक बार आपके अंदर ये गुण आ गए तो फिर कभी उस मार्ग पर जाने की ओर प्रवत्ति ही नहीं होगी। लेकिन इस अच्छे मार्ग पर चलने के लिए साहस ज़रूर चाहिए और वह साहस है अंतर्मन का, जिसमें निरंतर अच्छे और बुरे विचारों के बीच द्वंद की स्थिति में अच्छे की ओर अपनी प्रवृत्ति बढ़ानी होगी। तब हर शोध और हर आविष्कार के प्रति दृष्टिकोण सकारात्मक हो जाएगा और विचार रचनात्मक।

अच्छा या बुरा - समझ का फर्क है। एक ही चीज अच्छी भी हो सकती है और बुरी भी। बस श्रेणी का फर्क होगा। एक समाज के लिए जो बुरा है, हो सकता है दूसरा समाज उसे अच्छा समझता हो। इसे यूं समझा जा सकता है कि जीवनरक्षक दवा जिस बीमारी विशेष में अमृत है, अगर स्वस्थ व्यक्ति उसे ले ले तो उसके लिए वह मृत्यु का कारण बन सकती है। पानी का अतिरेक तबाही का कारण बनता है और अगर पानी नहीं बरसे तो भी तबाही का कारण बनता है। कुछ लोग इसे अति से जोड़ते हैं

और मानकर चलते हैं कि 'अति सर्वत्र वर्जयेत', मगर अति तो दूर, एक ही वस्तु के बारे में अलग-अलग नज़रिया हो सकता है। उत्पादन के साधन जिसके अधीन होते हैं उसके लिए मुद्रास्फीति मुनाफा कमाने का साधन है और जो उत्पादक शक्तियाँ हैं, पर उत्पादन के साधन जिनके पास नहीं हैं, उनके लिए मुद्रास्फीति 'महंगाई डायन' बनकर आती है। तब अच्छा या बुरा, बस नज़रिये का ही अंतर है। एक दृष्टि से जो अच्छा है दूसरी दृष्टि से वह बुरा। लेकिन आमतौर पर मानव समाज इसे समझता नहीं और व्यर्थ की बहस कर अपना समय और शक्ति जाया करता है। कई बार समय भी 'अच्छा या बुरा' तय करता है।

अच्छे या बुरे की अवधारणा आदमी के दिमाग में होती है और वह हर चीज़ को अपने दृष्टिकोण से देखता है। जिसका दृष्टिकोण सकारात्मक होगा उसे वही चीज़ सकारात्मक और ऊर्जावान लगेगी, जो अगले आदमी को नकारात्मक लग सकती है। अपराध से जुड़ी हर खबर को पुलिस का आदमी गलत बताएगा तो जनता उसे सही। ऐसा कहा जाता है कि पुलिस की नज़र में हर आदमी अपराधी है और एक सज्जन व्यक्ति की नज़र में अपराधी भी इंसान। दोनों के सोचने के नज़रिए अलग जो होते हैं। एक अपराधी भी इंसान होता है। उसके अंदर भी वे सारे सद्गुण होते हैं जिनसे कोई व्यक्ति महान बनता है और एक सज्जन आदमी के अंदर भी कई अवगुण होते हैं।

बस देखना यह है कि उसके अंदर के कौन-से गुण किन गुणों पर हावी हो गए। अगर अवगुण हावी हो गए तो कोई भी आदमी बुरा बन सकता है और इसके विपरीत वह महान बन सकता है। गांधी जी ने स्वयं अपनी आत्मकथा में लिखा है कि एक बार उन्होंने अपने पिता का कुछ सोना चुराया था, लेकिन इसके बाद उनके मन में इतना प्रायश्चित हुआ कि उन्होंने पिता से माफी मांगने की ठानी। पिता से रूबरू होकर कहने की हिम्मत नहीं पड़ी तो उन्होंने लिखकर माफी मांगी। पिता ने माफ कर दिया और इसका इतना अधिक असर उन पर पड़ा कि उन्होंने सदा-सदा के लिए चोरी नहीं करने और झूठ न बोलने की कसम खा ली। यही आदमी की प्रवृत्ति है। अगर वह साहस दिखाकर अपने अवगुणों को दबा लेता है तो उसे आदर्श बनने से रोका नहीं जा सकता।

इससे निष्कर्ष यही निकलता है कि अच्छा या बुरा मानव स्वभाव ही होता है। यह अपने आप में कोई विशेषण नहीं है। एक ही चीज़ किसी की नज़र में अच्छी और दूसरे की नज़र में बुरी होती है। इसलिए किसी उत्पाद या वस्तु अथवा विचार को हम अच्छा या बुरा नहीं कह सकते। अच्छा या बुरा उसे धारण करने वाले के मन में होता है। एक व्यक्ति पत्थर में मूरत देखता है तो दूसरा उसे पत्थर मानता है। एक ऊर्जा के जरिए विद्युत निर्माण करता है तो दूसरा परमाणु बम बनाकर विध्वंस की तैयारी करता है। इसलिए सिर्फ उत्पाद देखकर उसे अच्छा या बुरा बता देना कोई बुद्धिमत्ता नहीं।

छोटा सा सफर

बहुत छोटा सा सफर होता है बेटी के साथ
बहुत कम वक्त के लिए वह होती हमारे पास।।

असीम दुलार पाने की हकदार है बेटी,
समझो वह भगवान का आशीर्वाद है बेटी।

घर की चहल पहल होती है बेटी
जीवन में खिला कमल है बेटी ।।

बेटी के प्यार को कभी आजमाना नहीं
ये वो टुकड़ा है दिल का, जिसे कभी रुलाना नहीं ।।

पिता का गुमान होती है बेटी
जिन्दा होने की पहचान होती है बेटी।।

कुसुम गारु
मानव संसाधन विभाग
जोधपुर आंचलिक कार्यालय

बैंकिंग व्यवसाय में हिंदी

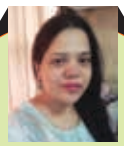

सोनिया सावंत
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
आंचलिक कार्यालय
भुवनेश्वर अंचल

बैंकिंग एक सेवा उद्योग है और किसी भी सेवा उद्योग में ग्राहक भाषा का महत्व बहुत ज्यादा होता है। सरकारी बैंक भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। यह भारत के हर आम आदमी को आर्थिक गतिविधि से जोड़ती है। राष्ट्र के आर्थिक जगत की धुरी उस देश की बैंकिंग व्यवस्था होती है। बैंकों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाना न सिर्फ एक संवैधानिक दायित्व है बल्कि इससे बैंकिंग कार्य जन-जन तक पहुंचाने में काफी मदद मिलेगी और परिणामस्वरूप कम पढ़े-लिखे लोग भी बैंकों में बेझिझक पहुंचकर अपनी लेनदेन की प्रक्रिया आसानी से कर सकेंगे जिससे बैंकिंग कारोबार में भी काफी बढ़ोत्तरी हो सकती है। सामाजिक बैंकिंग के इस युग में जनता की भाषा हिन्दी में काम कर बैंकों में बेहतर ग्राहक सेवा प्रदान करना एक अभिन्न अंग बनना चाहिए। जब तक ग्राहकों को उसकी भाषा में बैंकिंग सेवाएं नहीं मिलेंगी तो वे बैंक से जुड़ेंगे ही क्यों ?

बैंकिंग कारोबार समाज के अंतिम छोर तक तभी पहुंच सकता है, जब हम आम आदमी की भाषा का प्रयोग करें। हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं की इसमें अहम भूमिका है। हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं के प्रयोग से बैंकिंग कारोबार मजबूत होगा। इससे देश का समावेशी विकास संभव होगा। अधिकांश लोग हिंदी अथवा क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग करते हैं। बैंकिंग कामकाज भी अगर इन्हीं भाषाओं में होगा तो लोग बैंकों से सरलता से जुड़ सकेंगे। वैश्विक पटल पर हिंदी सशक्त भाषा के रूप में अपनी पहचान रखती है। अब अगर इसे तकनीक से जोड़ दिया जाए तो बहुत कुछ आसान हो जाएगा।

आज बैंकिंग व अन्य वित्तीय व्यवसायों में जो प्रतिस्पर्धा और चुनौती है, उससे हिंदी का महत्व और भी बढ़ जाता है। जो भी तकनीक आम आदमी से जुड़ी है, उसमें असीम वृद्धि की हमारे यहां गुंजाइश है। हमारी अर्थव्यवस्था उठाव पर है, इसलिए तकनीक का प्रयोग करने वालों की संख्या में आश्चर्यजनक बढ़ोतरी हुई है। यह बैंकिंग व अन्य वित्तीय संस्थानों में हिंदी के महत्व को देने व उसके प्रचार-प्रसार के कारण ही है। आज सभी सरकारी व निजी बैंक, बीमा कंपनियों में प्रयोग में आने वाली अधिकांश सामग्री, दस्तावेजी काम हिंदी में हैं या द्विभाषी (हिंदी-अंग्रेजी) हैं। यहां तक कि विदेशी बैंक भी हिंदी का एक स्तर तक प्रयोग कर रहे हैं।

आज़ादी के 75 वर्ष बाद भी हमारा अधिकांश कार्य अंग्रेजी में हो रहा है, जबकि हिंदी सरल एवं वैज्ञानिक भाषा है। हिंदी जानना, बोलना और लिखना पिछड़ेपन की निशानी नहीं, अपितु यह तो गरिमामयी राष्ट्रीय अभिव्यक्ति है। वित्तीय व्यवसाय में हिन्दी को तभी सम्पूर्ण महत्व मिल पाएगा, जब यह सूचना प्रौद्योगिकी को आत्मसात कर लेगी। यह तकनीक भी अपनी सहज व्याप्ति के लिए भाषा का माध्यम ढूंढती है और जनभाषा से बेहतर कोई अन्य सशक्त माध्यम नहीं हो सकता। इसी कारण विश्व के प्रत्येक कोने तक हमारा संपर्क हो गया है। आज हम वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग द्वारा अपने घर पर या कार्यालय में बैठकर अपने अन्य अधीनस्थ कार्यालयों में काम कर रहे लोगों से संवाद कर सकते हैं। आज कम्प्यूटर उपभोक्ता के कामकाज से लेकर डाटा बेस तक में हिंदी पूरी तरह उपलब्ध है।

विज्ञान और तकनीक के युग के साथ हिंदी कदमताल करती दिखाई दे रही है। जब भी भाषा का विस्तार और विकास होता है, तब उसमें एक दृष्टि और जुड़ जाती है और वह है रोजगार की संभावना। आज हिंदी भाषा के बढ़ते चलन और वैश्विक रूप ने रोजगार की अनेक संभावनाओं को उजागर किया है। इसकी विविध क्षेत्रों में स्वीकृति और प्रयोजनीयता की नई दृष्टि से हिंदी को देखा जा रहा है। निश्चित ही इस दृष्टि में बाजार का बहुत बड़ा योगदान है। ज्ञानार्जन की अभिलाषा के कारण अनुवाद प्रौद्योगिकी का विकास हो रहा है। भारतीय संविधान द्वारा खड़ी बोली को राजभाषा स्वीकार किए जाने के साथ हिंदी

का परंपरागत स्वरूप और अध्ययन व्यावहारिक हो गया है। हर जीवित भाषा में विज्ञान, तकनीक और उद्यमिता की संभावनाएं होती हैं, उसकी प्रयोजनीयता की भी संभावनाएं होती हैं। यह संभावनाएं हिंदी में हैं और इसीलिए हिन्दी बैंकिंग व्यवसाय की सफलता में एक महत्वपूर्ण माध्यम बन सकती है।

हिन्दी कारोबार का बेहतर माध्यम है। वित्तीय समावेशन एवं प्रधानमंत्री जन-धन योजना के तहत खाता खोलने एवं ग्रामीण जनता के साथ कारोबार करने में हिन्दी ने सशक्त भूमिका निभाई है। जन-धन योजना के तहत 22 करोड़ से ज्यादा खाते खोले गए। योजना की घोषणा होने पर 12 करोड़ से अधिक खाते तो पहले 6 माह में ही खुल गए थे। ये खाता खुलवाने वाले अधिकतर आम गरीब मज़दूर, छोटे किसान थे। यह सब हिंदी की सर्वसुलभता तथा उसके आम बोलचाल की भाषा होने के कारण हुआ। बैंक का कारोबार बढ़ा, ग्राहक संख्या में बढ़ोत्तरी हुई, जन-जन तक पहुंचने पर बैंक की स्वीकार्यता बढ़ी। सभी वित्तीय संस्थानों ने हिंदी की महत्ता को अनुभव किया।

भारत में कारोबार करने वाली कंपनियों के लिए भी हिंदी अनिवार्य जरूरत बनती जा रही है। हिंदी देश की 22 अनुसूचित भाषाओं में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। बतौर वैश्विक समुदाय हम सभी को सांस्कृतिक विविधता को स्वीकार करना होगा। यह भाषा के क्षेत्र में भी हमारे सामने आती है। इसके साथ ही हमें यह भी समझना होगा कि विश्व अर्थव्यवस्था में व्यवसाय प्रमुख है। यहां हर उस भाषा के लिए अवसर है जो दूसरों को आपके साथ व्यापार का अवसर प्रदान करती है। भारत आने वाले कारोबारियों के लिए हिंदी इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि बिना स्थानीय भाषा की जानकारी के वे स्थानीय संस्कृति से तालमेल नहीं बिठा पाएंगे। निजी क्षेत्र में भी बैंकिंग कारोबार बढ़ाने के लिए उपनगरों व ग्रामीण इलाकों में स्थानीय लोगों को भर्ती कर उन्हें स्थानीय भाषा में काम करने के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है।

हमें बैंकिंग में सिर्फ हिंदी में कार्य करके ही सन्तोष नहीं करना है, बल्कि लोगों के दिलों तक पैठ बनानी है। ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचना है। इसके लिए हमें अपने इरादों को मजबूत करना होगा, दृष्टि को गहराई देनी होगी और अधिकतम सरल एवं सहज हिन्दी का प्रयोग कर राजभाषा को आगे बढ़ाना होगा। यह इसलिए क्योंकि किसी भी भाषा की सरलता एवं बोधगम्यता ही उसको आमजन में प्रयोग करने हेतु लोकप्रिय बनाती है। इसलिए हिन्दी को बैंकिंग में इस तरह प्रयोग करना है कि यह बैंक के हर ग्राहक के प्रयोग करने हेतु आसानी से उनके बीच प्रचलित हो जाए। भारत एक बहुभाषी देश है और समस्त भारतीय भाषाएं हिन्दी की सहोदर भाषाएँ हैं। हिन्दी की पहुँच देश के कोने-कोने तक है। हम हिन्दी के सरलतम प्रयोग से हर जगह हिन्दी का प्रयोग बढ़ा सकते हैं और हिन्दी के माध्यम से कारोबार वृद्धि में एक मुकाम हासिल कर सकते हैं।

कोशिश करता जा

न हार मन से तू कभी,
बढ़ते रहो हर पल यूँ ही।
न पूछ मंजिल है कहां,
न रुक, तू कोशिश करता जा !

सब रास्ते खुल जाएंगे,
तन-मन से कोशिश करता जा !

जो न मिला उसे भूल जा,
उस पर न तू आँसू बहा।
ठोकर ही, चलना सिखाएँगी,
चल उठ, तू कोशिश करता जा !

साधन सभी जुट जाएंगे,
तन-मन से कोशिश करता जा !

ईश्वर भी फूल बरसाएंगे,
अपने भी साथ निभाएंगे ।
हर लक्ष्य को तू भेद कर,
पुरजोर कोशिश करता जा !

जीवन सफल होगा तेरा,
तन-मन से कोशिश करता जा !

श्रुति रानी
प्रबंधक
बोकारो स्टील सिटी शाखा
बोकारो अंचल

रिश्तों की जमापूंजी

मिहिर जोशी
अधिकारी
आंचलिक कार्यालय
वड़ोदरा अंचल

कंडक्टर भाई, ये बस में मेरी बेटी है। अपने मामा के घर जा रही है। बस इसका ख्याल रखना.... और 'वासणा' आने पर इसे उतार देना।

अठारह साल पहले की एक घटना है। अगस्त का महीना था। बरसात के दिन थे। आणंद के पास एक गांव के सुखी और संपन्न पटेल पिता अपनी तेरह-चौदह साल की बेटी आरती को अहमदाबाद जाने वाली एसटी बस में बिठाते समय कंडक्टर को सिफ़ारिश कर रहे थे। अहमदाबाद के मुकेशभाई भी उसी सीट पर बैठे थे जहां लड़की को सीट मिली थी और चुपचाप यह दृश्य देख और सुन रहे थे।

आरती के पिता अरुणभाई पटेल की चिंता अभी भी बनी हुई थी, "बेटा, अगर खेत का ये काम नहीं होता, तो मैं तुम्हारे साथ जरूर आता। रक्षाबंधन है...भाई को राखी बांधनी है...। बस यही एक महीने से सुनकर पूरे घर के कान पक गए। वरना तुम्हें कहीं अकेला जाने नहीं दिया। बेटा, अपना ख्याल रखना। अपना हाथ खिड़की से बाहर मत निकालना। अगर कोई बस में कुछ खाने-पीने की पेशकश करे तो उसे मना कर देना। तुम्हारे मामा 'वासणा' बस स्टॉप पर तुम्हें लेने आ ही गए होंगे।"

बस शुरू हो गई। उसके पिता के शब्द बस के इंजन की आवाज में दब गए। टिकट...! टिकट...! बोलते हुए कंडक्टर ने आरती को 'वासणा' की टिकट दी और कहा, 'घबराओ नहीं बेटा, 'वासणा' आते ही मैं आपको बता दूंगा।'.... फिर भी आरती डरी हुई थी। वह बगल में बैठे मुकेश भाई को बार-बार याद दिलाती थी और कहती थी कि अगर मुझे नींद आ जाए तो जगाना मत भूलना।

वैसे अगर देखा जाए तो पूरी घटना खुशी के साथ खत्म हो जाती। लेकिन जिंदगी का सफर इतना आसान नहीं है। सबसे बड़ी गड़बड हुई 'वासणा' नाम को लेकर।

चरोतर में 'वासणा' नाम का एक बहुत छोटा सा गांव है। कंडक्टर जब दूर दरवाजे के बगल में अपनी सीट पर बैठा था और टिकटों की संख्या गिन रहा था, किसी को नहीं पता था कि 'वासणा' कब पीछे छूट गया। और जब अहमदाबाद में 'वासणा' के सामने बस पहुंची तो मुकेश भाई ने आरती को जगाया, "बेटा, 'वासणा' आ गया।"

आरती चौंक गई। इतना बड़ा शहर, इतना शोर, इतने वाहन और लोगों की इतनी भीड़! वो बहुत ज़ोर से रोने लगी, 'मैं यहाँ नहीं रहना चाहती। मुझे मामा के घर जाना है।' आखिरकार मुकेश भाई ने पूछा, "बेटा, क्या तुम मुझ पर विश्वास करती हो? तो मेरे साथ आओ।" आरती ने मुकेश भाई की आंखों में दया देखी और उनके साथ घर पहुँचकर आरती को पत्नी के हाथ में सौंप दिया और कहा "किसी की अमानत है, हमें आज की रात उसका ख्याल रखना है।" यहां एक तरफ आरती डरी हुई थी तो दूसरी तरफ आरती के अपने मामा के घर न पहुँचने के समाचार से पूरे घर में भूकंप आ गया था। सवेरे जब मुकेश भाई आरती को छोड़ने उसके गांव गए तो आरती को देखकर सबकी खुशियों का पार नहीं रहा और मानो अरूणभाई मन ही मन मुकेश भाई का आभार व्यक्त कर रहे थे।

दूसरे ही दिन अरूणभाई, अपने पूरे परिवार को लेकर मुकेश

भाई के घर पहुंचे और भेंट-सौगात देते हुए बोले, "आरती बेटा, मुकेशभाई के दोनों बेटे भी तेरे भाई हुए और आज से रिश्तों की एक नयी पूंजी शुरू हो रही है रक्षाबंधन के त्यौहार के साथ।"

वर्ष बीतते गए। आरती किशोरावस्था की बाड़ से कूदकर यौवन के बगीचे में प्रवेश कर गई। आखिरकार उसकी शादी अमेरिका में स्थित देव नामक ग्रीन कार्डधारक व्यक्ति से हुई। शादी हो चुकी, हनीमून भी हो गया और अमेरिका वापस जाने का समय करीब आ गया। आरती को वहां जाने की रस्म भी निभानी थी। उसके लिए अहमदाबाद आना जरूरी था।

इसी दौरान 'वासणा' नाम से जुड़े हुए अतीत के उस प्रसंग के बारे में आरती ने देव को बताया। पति ने कहा, "वाह! अगर ऐसा है तो मामा की सबसे बड़ी कृपा मुझ पर ही है। पूछो, कैसे? अगर उस रोज मुकेश मामा ने आपको नहीं बचाया होता, तो आप कहां होते? मुझे पत्नी नहीं मिलती।"

अमेरिका पहुँचने के बाद एक दिन देव ने मुकेश भाई को फोन किया, "मामा, मुझे आपकी आर्थिक परेशानियों और चिंताओं के बारे में बहुत कुछ पता चला है। पर आप बिलकुल चिंता मत कीजिए। आपके साथ, आपके दोनों बेटों को कंप्यूटर या एमबीए पढ़ने के लिए मैं यहाँ बुला रहा हूँ। दोनों अभी छोटे हैं, लेकिन जैसे ही वे दोनों बड़े होंगे तो एक की शादी अपने चचेरे भाई की बेटी के साथ और दूसरे के लिए अपने परिचितों में से एक उपयुक्त दुल्हन ढूंढकर अपना कर्ज़ अदा करना चाहता हूँ।"

उस रात मुकेश भाई आँखों में हर्ष के अश्रुओं के साथ अपनी पत्नी से कह रहे थे, "मुझे समझ में नहीं आता कि ब्रह्मांड को नियंत्रित करने वाली अदृश्य शक्ति के दिमाग में क्या चल रहा है? उस रात आरती का मार्ग भटकना एक संयोग था या कुछ और? या सही समय पर नि:स्वार्थ बुद्धि के लिए अपने कर्तव्य का एहसास करने का यह कार्य हमें यह चमत्कार दिखा रहा है? या लोग कहते हैं कि भगवान हमेशा अच्छे लोगों का ख्याल रखते हैं?"

थोड़ा और आगे चल

नित नूतन कर सृजन, मन को न तू कर विकल,
थक कर न बैठ पथिक,
आई नई भोर..थोड़ा और आगे चल।

क्या हुआ जो कुछ छूट गया,
अपना कोई जो रूठ गया,
तू चातक हृदय में आस रख,
आई नई भोर..थोड़ा और आगे चल।।

व्याप्त संसार क्षितिज पर महाक्रांति,
तू मुर्दा मन में प्राण भर,
नूतन क्रांति का संचार लिए,
आई नई भोर..थोड़ा और आगे चल।

क्या खोजते हो दुनिया में, क्या देखते हो औरों में?
खुद से बात कर..मन अपना शांत रख,
कठिन जिंदगी होगी सरल,
आई नई भोर..थोड़ा और आगे चल।।

करो स्वागत नूतन प्रभात का,
नव वसंत, नव उल्लास का।
मिलेगी सफलता..मन में विश्वास भर..प्रयास कर..

आई नई भोर..थोड़ा और आगे चल।
आई नई भोर थोड़ा और आगे चल।।

वर्षा राय
गांधीनगर शाखा
गांधीनगर अंचल

यारों की यारी

श्री नरेन्द्र गर्ग
पूर्व मुख्य प्रबन्धक
जयपुर अंचल

"खोल लिया होता दिल अगर वक्त पर यारों के साथ
तो आज खोलना नहीं पड़ता औजारों के साथ।"

व्हाटसएप पर एक मैसेज आया कि हार्ट की सर्जरी कराएं। एक व्यक्ति से मिलने उसका दोस्त आया, बोला और उसकी आँखे भर आई। पढ़कर एक बार तो शब्दों के तालमेल पर मुंह से 'वाह' निकला, पर अगले ही पल दिल मजबूर हो गया ये सोचने के लिए कि कुछ सीमा तक यह बात बिल्कुल सही है कि क्यों हम अपने दु:ख किसी से साझा नहीं करते? मन की बात क्यों नहीं कह पाते हैं किसी से? क्यों अंदर ही अंदर घुटते रहते हैं? शायद यह आशंका रहती है कि तकलीफ सुनकर लोग हमारी हंसी उड़ाएंगे या एक को बताया तो सबको पता चल जाएगा। ऐसा सोचकर हम अपनी तकलीफ दूसरों से तो क्या, अपने घरवालों तक से साझा नहीं कर पाते हैं।

आज प्रतिस्पर्धा का दौर है। घर, ऑफिस, रिश्तेदारी, समाज - हर जगह हर व्यक्ति बहुत ही तनावपूर्ण जीवन जी रहा है जिसका सीधा असर हमारा हृदय झेल रहा है। इससे हृदयाघात की संभावनाएँ दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। पहले 60-70 की उम्र में लोगों को हार्ट अटैक आता था, अब किसी भी उम्र के व्यक्ति को अटैक आ जाता है। कम उम्र के बच्चों को स्ट्रोक आ जाने से परिवार पूरी तरह बिखर जाता है। किशोरावस्था में बच्चों को हृदय संबंधी बीमारियाँ हो रही हैं। इसका मुख्य कारण है हमारी जीवन शैली।

आज पढ़ाई, नौकरी, रिसर्च आदि के चलते बच्चों को घर से दूर रहना पड़ता है। पढ़ाई व नौकरी में काम के दबाव के कारण वह न किसी से मिल पाता है और न ही जीवन का आनंद ले पाता है; बस मोबाइल फोन, इन्टरनेट आदि में ही उलझा रहता है। यथार्थ, दुनियां एवं दोस्तों से कटकर आभासी दुनिया में जीता है। घरवाले साथ रहते नहीं है, अत: उनके खाने-पीने, सोने-जागने, रहने के कोई ठिकाने नहीं होते हैं और वे अपनी दिनचर्या बिगाड़ बैठते हैं और इसका असर उनकी पाचन-क्रिया पर होता है। उन्हें बाजार का तला-भुना, बासी-कुसी, ठंडा-गरम, वक्त-बेवक्त खाना खाना पड़ता है और वे अव्यवस्थित दिनचर्या के शिकार हो जाते हैं।

और इससे भी बढ़कर बच्चे बीमार होने पर डॉक्टर से सलाह लेने की बजाय गूगल सर्च करके दवाइयाँ खाते रहते हैं। इससे एक बीमारी की जगह कई बीमारियाँ लग जाती हैं। हृदय रोग का मुख्य कारण है - ब्लड-प्रेशर। 120/80 नार्मल बीपी होता है। इससे ज्यादा होने पर स्ट्रोक की संभावना बढ़ जाती है। जिन बच्चों के माता-पिता को मधुमेह की बीमारी होती है, उन बच्चों में हृदयाघात की संभावना 50% तक बढ़ जाती है। जिनका कोलेस्ट्रोल ज्यादा होता है यानि बीएमआई ज्यादा होता है, उनका वजन अधिक बढ़ जाता है। परिणामस्वरूप वहाँ भी स्ट्रोक की संभावना ज्यादा रहती है।

स्ट्रोक आने पर व्यक्ति को छाती में दर्द या दबाव महसूस होता है, मसूढ़ों में दर्द होता है या वे सुन्न हो जाते हैं, धड़कन धीमी हो जाती है, घबराहट होती है, चक्कर आते हैं, पसीना बहुत ज्यादा आता है। इस प्रकार हृदय संबंधी बीमारियों के कई लक्षण सामने आते हैं।

इन सबसे बचने के लिए सामान्य व्यक्ति को तीन वायदे स्वयं से करने चाहिए- 'नो तरी', 'नो वरी', 'नो हरी'।

1. नो तरी- यानि बाजार की तली-भुनी वस्तुएँ, मसालेदार सब्जियाँ आदि की बजाय हाई फाइबर युक्त भोजन खाएँ। लहसुन-अदरक कोलेस्ट्रॉल कम करते हैं व रक्त का थक्का बनने से रोकते हैं। एक कप छाछ प्रतिदिन अपने भोजन में अवश्य शामिल करें।

2. नो वरी- यानि चिंता से मुक्ति। ज्यादा तनाव में रहने से शरीर में एक किस्म की वसा बनती है जिसे 'बैड कोलेस्ट्रॉल' कहते हैं। इससे नसों में संकुचन होता है। इससे बचने के लिए योग, प्राणायाम, व्यायाम, टहलना आदि अपनी दिनचर्या मे शामिल करें। खुश रहें, सकारात्मक सोचें। रात्रि में 7-8 घण्टे की नींद अवश्य लें। एक्सरसाइज से कोलेस्ट्रॉल, हाई ब्लड-प्रेशर व वजन नियंत्रित रहता है। ध्यान करें। चिंता नहीं, चिन्तन करे।

3. नो हरी- यानि किसी काम में जल्दबाजी न करें। कुछ लोग हर काम में बड़ी हड़बड़ी करते हैं, काम न होने पर इन्हें जल्दी गुस्सा आ जाता है। इससे रक्तचाप बढ़ जाता है एवं स्ट्रोक की संभावना बढ़ जाती है। इससे बचने के लिए अपने कार्यों की प्राथमिकता के अनुसार सूची बनाकर एक-एक कार्य को निपटाएँ व थोड़ा धैर्य रखें।

और सबसे बड़ी बात यह कि अपने परिजनों एवं मित्रों के साथ समय बिताएँ। अकेले चिंताग्रस्त रहने की बजाय समस्या दूसरों को बताकर उनका समाधान खोजे, खुश रहें। दूसरों से ईर्ष्या करने की बजाय स्वयं के व्यक्तित्व को निखारने का प्रयास करें। काम में टालमटोल की आदत छोड़कर सब काम व्यवस्थित रूप से करें। खुली हवा में सांस लें और जी भरकर हंसे। बीमारी होने पर परिवार व दोस्तों का साथ होने पर रिकवरी भी 40% तक जल्दी होती है।

अतः योग, व्यायाम, टहलने, ध्यान आदि को अपनी दिनचर्या में शामिल करें जिससे आपका दिल मजबूत रहे व आप एक खुशहाल जिंदगी जी पाएँ।

हिन्दी के मनोभाव

तेरे मन के हर भाव को,
शब्द देने में समर्थ,
तेरे अज्ञान का मुझको,
क्यों दोष देता है व्यर्थ।

एक शब्द और भाव अनेक,
है यही खूबी मेरी,
मन के हर कोमल भाव को,
सब से पहले देती अर्थ।

प्रथम शब्द बोला था मेरा,
लेकिन फिर भूला मुझे,
जीवन की कश्मकश में,
निर्णय के देती मैं शब्द।

हर शब्द में एक भाव,
है एक भाव में सारे अर्थ,
भूलकर तू अपनी भाषा,
क्यों कर रहा संस्कृति व्यर्थ।

अन्य भाषाओं का मान,
पर निज भाषा को पहले प्रणाम,
ताकि जड़ें रहे मजबूत,
संस्कार बने रहें अटूट।

मातृभाषा ही तो,
मन की भाषा है,
इसका उद्भव होना ही तो,
सुनहरे कल की आशा है।

अमित चौहान
विपणन प्रबंधक
चण्डीगढ़ अंचल

नारी तेरी मुस्कान तेरा श्रृंगार

हेना परवेज
बोकारो अंचल

'नारी' शब्द सुनने में भले बहुत छोटा लगता है परन्तु इस शब्द में हमारी पूरी दुनिया समा जाती है। नारी, समाज और जीवन का विशिष्ट अंग है। नारी-विहीन जीवन और समाज की कल्पना कर पाना असंभव है। नारी चाहे जननी, माँ, बहन, बेटी, पत्नी - किसी भी रूप में हो, घर-परिवार के अस्तित्व का कारण है।

नारी, क्योंकि स्वभाव से ही कोमल, सुन्दर, सलोनी हुआ करती है, सो बन-सँवरकर रहना उसके व्यवहार में शामिल है जिसे आज के दौर में हम फैशन का नाम देते हैं। श्रृंगार के अपने इस शौक को पूरा करने के लिए धातुओं की खोज और प्रयोग से पहले नारी फूलों से बनाए हुए आभूषणों का इस्तेमाल करती थी। वक़्त के साथ जब मनुष्य ने प्रगति की और धातुओं में सोने-चाँदी की खोज हुई तो स्त्रियों को हीरे-जवाहरात जड़े सोने-चाँदी के गहने ज़्यादा लुभाने लगे।

यूँ तो संसार में नारी के सोलह श्रृंगार के लिए बिंदी, गजरा, टीका, सिन्दूर, काजल, चूड़ी, कंगन इत्यादि कई साधन हैं जिनका प्रयोग कर एक स्त्री अपनी सुंदरता को और निखारती है। किन्तु ये सारे श्रृंगार के साधन मानव निर्मित हैं। सजना-सँवरना नारी की प्रवृत्ति है और कुछ समय के लिए इन साधनों के प्रयोग से वह जरूर खुद को सुन्दर महसूस करती है। परन्तु ये आभूषण कुछ समय के लिए ही सुंदरता को बढ़ा सकते हैं। इनका अस्तित्व कुछ समय भर का होता है। सही मायनों में एक नारी का श्रृंगार उसका स्वभाव, उसकी मनमोहक मुस्कान होती है।

नारी अपने जन्म से ही सुंदरता का प्रतीक होती है चाहे वह किसी भी रंग में हो। वक़्त के साथ उसकी सुंदरता और बढ़ती जाती है। नारी को सुसज्जित करने के लिए आज मनुष्य ने ढेरों आभूषण बना दिए हैं, लेकिन वे सब फीके हैं नारी की मनमोहक मुस्कान के सामने। नारी जब एक माँ के रूप में प्रसव की पीड़ा से गुजरती है तो संसार में उस पीड़ा की तुलना किसी तकलीफ से नहीं की जा सकती। परन्तु उस पीड़ा के फलस्वरूप जब वह अपने बच्चे को गोद में ले माँ बनने की ख़ुशी से मुस्कुराती है तो उसके चेहरे के सामने संसार के सारे आभूषणों की सुंदरता फीकी पड़ जाती है।

वही माँ जब एक लक्ष्मी रूपी बेटी को जन्म देती है तो उसकी ख़ुशी अलग ही होती है। वह उसमें अपना प्रतिबिंब देखती है। उस बेटी के आगमन पर पूरा घर उसकी चहचहाहट से गूँज उठता है। दिन भर की कड़ी मेहनत के बाद जब थका-हारा पिता घर की दहलीज पर कदम रखता है और उसकी नज़र मासूम-सी चहकती बेटी पर पड़ती है तो वह पल में अपनी सारी थकान भूल जाता है। क्या श्रृंगार के लिए उस बेटी ने बाजार से बहुत सारा मेक-अप लगाया होता है? क्या उसने ढेरों आभूषण पहने होते हैं? बिलकुल नहीं। सही मायने में उसकी वो मुस्कान, वो चहकना ही उसका श्रृंगार होता है जिससे पूरा घर रौशन हो जाता है।

बहन के रूप में वही नारी दिनभर भले ही अपने भाई से लड़ती हो, लेकिन उसकी मनमोहक मुस्कान ही वह कारण होता है जिससे कि उसकी विदाई पर सबसे ज़्यादा रोने वाला व्यक्ति भी उसका भाई ही होता है। लड़की जब शादी के बाद अपने पिता के घर को छोड़कर ससुराल जाती है तो अपनी मुस्कान के पीछे अपने बचपन के घर को छोड़ने का दुःख छिपाए रहती है। वह अपने ससुराल को गेंदे के फूल की तरह खिला पाती है, साथ ही रिश्ते को अपने मुस्कान रूपी श्रृंगार से निखारती है। काम से थक कर घर आए पति को जब उसकी पत्नी मुस्कुरा कर पानी का गिलास देती है तो उसकी आधी टेंशन वहीं खत्म हो जाती है। सास-ससुर को वह जब हँसी से चाय का प्याला पकड़ाती है तो उन्हें जो ख़ुशी मिलती है, उसका पता उनकी बूढ़ी आँखों से

छलकती ख़ुशी से चल जाता है। क्या ये जादू मार्केट में उपलब्ध महँगे से महँगे श्रृंगार के साधन जैसे काजल, पाउडर इत्यादि कर सकते हैं? ये जादू मुस्कान से ही हो सकता है किसी अन्य आभूषण या सौन्दर्य प्रसाधनों से नहीं।

मुस्कान ही एक नारी का वो श्रृंगार है जिससे वह चाहे तो दुनिया की हर मुश्किल आसान कर सकती है। पर आज की नारी ये भूल गई है। फैशन के दौर में वह इस कदर अंधी हो गई है कि उसे बाजार के सौन्दर्य प्रसाधन और आभूषणों पर ज़्यादा विश्वास है। उन्हें लगाकर वह गौरवान्वित महसूस करती है कि इन चीज़ों से उसकी सुंदरता कई गुना बढ़ गई है, किन्तु वह भूल जाती है कि वह चाहे कितना भी काजल, पाउडर, लिपस्टिक लगा ले उसकी सुंदरता बिना मुस्कान के 'बिना शक्कर की चाय' की तरह अधूरी है।

चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, सबके चेहरे की सुंदरता एक दिन ढल ही जाती है। बचपन के बाद जवानी और उसके बाद बुढ़ापे का आना निश्चित है। जो चीज़ वक़्त के साथ नहीं ढलती और सदैव हमारे साथ रहती है, वह है - 'इंसान के गुण'। वक़्त का प्रभाव इसकी चमक फीकी नहीं कर पाता। इन गुणों में भी सबसे प्रमुख है एक व्यक्ति का आचरण, उसका व्यवहार। अगर कोई व्यक्ति अपने चेहरे पर मुस्कान लिए किसी से बात करता है तो निश्चित ही वह सामने वाले का मन मोह लेता है। तो क्या ऐसे में मुस्कान को बहुमूल्य आभूषण कहना गलत होगा, कतई नहीं ।

आज के इस सशक्तिकरण के युग में नारी पुरुष से किसी भी काम में पीछे नहीं है। पहले नारी को घर की शोभा समझा जाता था। उनका मूल काम घर संभालना और बच्चों की देखभाल करना होता था। उस समय भी वह अपने बहुमूल्य श्रृंगार (मुस्कान) से हर मुश्किल काम को करते हुए सबका दिल मोह लेती थी। और आज जब ज़रूरत आन पड़ी तो वह पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी हो जाती है। कोई ऐसा क्षेत्र नहीं, जहाँ वह अपना लोहा नहीं मनवा चुकी है। इसमें बाजार में उपलब्ध श्रृंगार की वस्तुओं से कहीं ज़्यादा मुस्कान से परिपूर्ण उसके आत्मविश्वास रूपी ताकत ने उसका साथ दिया है ताकि वह हर मुकाम हासिल कर पुरुषों से बराबरी कर पाए। इस संदर्भ में हमें ज़्यादा दूर नज़र दौड़ाने की ज़रूरत नहीं है। हाल में हुई बॉक्सिंग प्रतिस्पर्धा में निखत ज़रीन ने स्वर्ण पदक जीत कर हमारे बैंक के नाम का परचम लहराया है। इसमें काजल, पाउडर नहीं बल्कि उसका आत्मविश्वास, उसकी मुस्कान और उसका दृढ़ निश्चय उसका आभूषण बना, जिससे वह यह मुकाम हासिल कर पाई। ऐसे में 'मुस्कान' नारी का वह श्रृंगार है जिसकी तुलना कभी भी किसी से नहीं जा सकती।

ऐ नारी तुझे सलाम ।
तेरी मुस्कान पे पूरी दुनिया कुर्बान ।।

मंजिल पर जल्दी पहुँचने की कोशिश न कर

तू जिंदगी को जी,
उसे समझने की कोशिश न कर।

सुंदर सपनों के ताने-बाने बुन,
उसमें उलझने की कोशिश न कर।

चलते वक्त के साथ तू भी चल,
उसमें सिमटने की कोशिश न कर।

अपने हाथों को फैला, खुल कर साँस ले,
अंदर ही अंदर घुटने की कोशिश न कर।

मन में चल रहे युद्ध को विराम दे,
खामख्वाह खुद से लड़ने की कोशिश न कर।

कुछ बातें भगवान पर छोड़ दे,
सब कुछ खुद सुलझाने की कोशिश न कर।

जो मिल गया उसी में खुश रह,
जो सूकून छीन ले वो पाने की कोशिश न कर।

रास्ते की सुंदरता का लुफ्त उठा,
मंजिल पर जल्दी पहुँचने की कोशिश न कर।।

राहुल कुमार सोनी
तिसरा शाखा
धनबाद अंचल

देश के सांस्कृतिक विस्तार में हिन्दी की भूमिका

चन्दन कुमार चौधरी
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
बोकारो अंचल

आजादी की लड़ाई में देश के विभिन्न क्षेत्रीय भाषा रूपी पुष्पों को राजभाषा हिन्दी रूपी धागे से एक सूत्र में पिरोकर हिन्दी ने अपनी सार्थक और सफल भूमिका निभाई। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित होते ही हिन्दी का उत्तरदायित्व काफी बढ़ गया। हिन्दी ने इसका भी निर्वहन कर देश के सांस्कृतिक विकास में अपनी महती भूमिका को प्रमाणित किया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरंत बाद भारत की सांस्कृतिक विरासत की रक्षा और भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार की चर्चाएँ होने लगीं, क्योंकि वास्तव में किसी देश या राष्ट्र का प्राण संस्कृति ही है। यदि किसी भी देश की अपनी कोई संस्कृति नहीं तो संसार में उसका अस्तित्व ही क्या ? विभिन्न देशों और जातियों की विभिन्न संस्कृतियाँ प्रसिद्ध हैं और उनमें प्राय: संघर्ष भी चलता रहता है। कहीं-कहीं तो संस्कृतियों की खिचड़ी बन जाती है और कहीं एक सबल संस्कृति निर्बल संस्कृति का नाश कर देती है।

संस्कृति का भूमि से संबंध होने से उसमें विभिन्नता आती है। किसी देश या एक ही देश के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों की जलवायु का प्रभाव वहाँ के निवासियों पर पड़ता है। किसी देश की भिन्न-भिन्न जलवायु का प्रभाव वहाँ के निवासियों के आचार-विचार, वेश-भूषा, रहन-सहन और भाषा-साहित्य आदि पर पड़ता ही है। संस्कृति के विभिन्न घटक हैं, लेकिन इन सभी घटकों और अंगों के मूल में भाषा और साहित्य है और इसे गतिशील बनाए रखने का कार्य भी भाषा-साहित्य द्वारा ही संपादित होता है। जिस संस्कृति की भाषा उन्नत और साहित्य सशक्त व समृद्ध होता है, वह उतनी ही ऊर्जावान होती है। इस अर्थ में भारतीय संस्कृति विश्व में सर्वोत्तम है, सर्वोपरि है, सिरमौर है क्योंकि भारतीय संस्कृति को प्रभावित करने वाले और संचालित करने वाले तत्व भाषा एवं साहित्य का सार्थक, विपुल, अनमोल भंडार है। इन्हें संरक्षित रखने और विश्व फलक पर लाने हेतु 9 अप्रैल 1950 को आजाद भवन, नई दिल्ली में माननीय अबुल कलाम आजाद की अध्यक्षता में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद का गठन किया गया। इसके माध्यम से भारतीय संस्कृति पर आधारित विभिन्न गतिविधियों का संचालन शुरू हुआ। हिन्दी यहाँ भी अपना बहुमूल्य योगदान देने में सफल रही। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा अपने संस्थापक अध्यक्ष की पुण्यस्मृति में प्रतिवर्ष सार्क देशों के नागरिकों के लिए एक लेख प्रतियोगिता का आयोजन हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी में किया जाता है। इन प्रतियोगिताओं में हिन्दी लेखों की निरंतर बढ़ती संख्या इसके सराहनीय योगदान का द्योतक है।

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान (आगरा) के माध्यम से हिन्दी ने देश के सांस्कृतिक विकास में नए मानक स्थापित किए। संस्थान की विभिन्न शाखाओं द्वारा संचालित गतिविधियों, पाठ्यक्रमों, प्रकल्पों की बढ़ती लोकप्रियता और निरंतर बढ़ती जन भागीदारी इसका प्रमाण है। भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार व भारत की सांस्कृतिक विरासत की अभिवृद्धि में हिन्दी की भूमिका को कई मंचों पर सराहा गया और इसके बाद विश्व हिन्दी सम्मेलन की शुरुआत हुई, जिसका प्रथम अधिवेशन 10-12 जनवरी 1975 को नागपुर में हुआ जहाँ इसकी उपयोगिता को संस्थागत रूप में रेखांकित किया गया। दूसरा अधिवेशन 28-30 अगस्त 1976 को मॉरीशस में हुआ। तीसरा अधिवेशन 1983 में नई दिल्ली में, चौथा अधिवेशन 1993 में मॉरीशस में हुआ। पाँचवाँ अधिवेशन 1996 में त्रिनिदाद एवं टोबैगो के पोर्ट ऑफ स्पेन में हुआ। 1999 में लंदन में,

2003 में सूरीनाम में, 2004 में न्यूयार्क में, 2012 में दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग में, 2015 में भोपाल में, 2018 में मॉरीशस में हुआ। 12वां विश्व हिन्दी सम्मेलन दिनांक 15-17 फरवरी 2023 को फिजी में आयोजित किया जा रहा है। विभिन्न देशों में सम्पन्न विश्व हिन्दी सम्मेलन यह बताने के लिए काफी है कि हिन्दी ने भाषा के रूप में अपना विस्तार तो किया ही, साथ ही भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों, मौलिक सिद्धांतों को भी अधिवेशनों के द्वारा समुद्र पार ले जाने में सफलता प्राप्त की। मॉरीशस के द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमंडल में शामिल पंडित नारायण चतुर्वेदी द्वारा भारत से गंगाजल और तुलसी का विरवा (पौधा) मॉरीशस के लिए भेंट स्वरूप ले जाना भारतीय संस्कृति के प्रसार का एक छोटा-सा उदाहरण है।

हमारी हिन्दी फिल्मों ने भी अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सवों में अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज कराकर इसे आगे बढ़ाने का काम सफलतापूर्वक किया।

भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार तथा इसके द्वारा प्रकाशित हिन्दी पुस्तकें, दूसरी भाषाओं में प्रकाशित पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद, हिन्दी में प्रकाशित उत्कृष्ट पुस्तकों का अन्य भाषाओं में अनुवाद हिन्दी के बढ़ते कदम के प्रतीक ही हैं।

साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित पुस्तकें, उनके द्वारा दिए जाने वाले पुरस्कार आदि की लोकप्रियता एवं उसकी स्वीकार्यता भी हिन्दी के बढ़ते कदमों को दर्शाते हैं। इस तरह के अनेक कार्य और उदाहरण दिए जा सकते हैं जिससे यह प्रमाणित होता है कि हिन्दी ने देश-विदेश में भारतीय संस्कृति को विस्तारित करने का काम मजबूती के साथ किया है।

सफल बैंकर की गुणवत्ता

क्रेडिट का कुशलतापूर्वक संचालन एक बैंकर की गुणवत्ता की अंतिम परीक्षा है। इसका मतलब यह नहीं है कि क्रेडिट के अन्य खंड महत्वपूर्ण नहीं हैं; परन्तु क्रेडिट में शामिल जोखिम की विशालता और व्यावसायिक बुद्धि-प्रखरता से बहुत सारे तत्वों को सहजने की उम्मीद के कारण बैंक ऋण या वित्तपोषण गतिविधि कठिन हो जाती हैं। जब तक ऋण की वसूली नहीं हो जाती है, तब तक डिफ़ॉल्ट की संभावना, जोखिम हेजिंग, आउटलुक अध्ययन, मार्केट फीलर्स और फीडबैक, चार्ज किए गए कैपिटल पर रिटर्न, बहुत सारे क्रेडिट वृद्धि के कारक इत्यादि के कारण एक अधिकारी द्वारा संपूर्ण क्रेडिट संचालन गतिविधि को कुशाग्र (रेज़र एज) रखा जाना अपेक्षित है।

क्रेडिट विश्लेषण का अपना एक पूरा चक्र होता है जो कर्ज हेतु आवेदन के साथ शुरू होता है और उसके बाद ऋण की समझ, क्रेडिट स्वीकृति, दस्तावेज़ीकरण, संवितरण, क्रेडिट संचालन व नियंत्रण, नियमित अंतराल पर संवितरण पश्चात् समीक्षा और अंततः खाता बंद होने पर पूर्ण होता है।

आम तौर पर 14 उप-खंड (मुख्य विशेषताएं) एक प्रभावी क्रेडिट विश्लेषण की रीढ़ हैं। ये हैं: 1. प्रारंभिक दस्तावेजों/जानकारियों के साथ क्रेडिट के लिए आवेदन की प्राप्ति, 2. निरीक्षण, 3. मार्केट खुफिया डेटा का संग्रह, 4. मार्केट की समीक्षा, 5. वित्तीय विश्लेषण, 6. क्रेडिट रेटिंग, 7. प्रस्ताव का मूल्यांकन, 8. प्रतिभूति व जमानतदार, 9. प्रस्ताव की प्रस्तुति, 10. नियम और शर्तें, 11. स्वीकृति और अनुमोदन, 12. दस्तावेजीकरण और प्रतिभूति सृजन व पूर्णता, 13. संवितरण के चरण, और 14. ऋण वितरण के बाद की समीक्षा, निरीक्षण, वसूली/प्राप्ति।

क्रेडिट अधिकारी के लिए उपरोक्त मापदंडों में से किसी भी एक को छोड़े बिना सभी को समेटकर क्रेडिट के विभिन्न चरणों पर काम करना अत्यावश्यक है। एक प्रभावशाली और विजयी ऋण अधिकारी या प्रबंधक बनने के लिए उसे किसी विधारण के बिना निष्पक्ष होने की परम आवश्यकता है।

टीम - एफ आर एम डी एवं ई एफ आर एम एस

बेरोज़गारी से स्वरोज़गार की ओर

अभिषेक कुमार
राजभाषा अधिकारी
चेन्नई अंचल

आधुनिक युग में बेरोज़गारी हमारे भारत देश की एक बहुत बड़ी समस्या बनकर उभरी है। बेरोज़गार उस वयस्क व्यक्ति को कहा जाता है जिसने अपनी अकादमिक शिक्षा पूर्ण कर ली है और जो काम करने की शारीरिक व बौद्धिक क्षमता, प्रतिभा, शक्ति व आवश्यक शैक्षिक पात्रता से लैस होने के बावजूद किसी भी प्रकार की नौक़री, व्यवसाय या उद्योग के माध्यम से धन अर्जित नहीं करता है। ऐसे व्यक्ति को बेरोज़गार कहा जाता है। बेरोज़गारी कई प्रकार की हो सकती है। किन्तु हम यहाँ मुख्यत: दो प्रकार की बेरोज़गारी की चर्चा करेंगे। शिक्षित बेरोज़गारी और अशिक्षित बेरोज़गारी। बेरोज़गारों की श्रेणी में शिक्षित व अशिक्षित, दोनों ही प्रकार के लोगों का समावेश हो सकता है।

शिक्षित बेरोज़गारी :-

काम पाने के लिए पर्याप्त प्रयत्न न करना

हमारे समाज में कई सारे सुशिक्षित युवक काम करने की इच्छा तो बहुत रखते हैं किन्तु काम पाने के लिए पर्याप्त प्रयत्न नहीं करते हैं। इसके चलते उन्हें लंबे समय तक काम नहीं मिलता है। यदि आपको काम चाहिए तो आपको काम की खोज तो करनी ही पड़ेगी। इसके बिना काम मिलना असंभव है।

प्रतियोगी परीक्षाएं देने हेतु अच्छी तरह से तैयारी न करना

कई विद्यार्थी अपनी शैक्षिक डिग्री प्राप्त करने के बाद प्रतियोगी परीक्षाएं देने के लिए कई सारे आवेदन फॉर्म्स भरते हैं। ये केवल परीक्षाएं देने में लगे रहते हैं। कई युवक तो परीक्षा की तैयारी किए बिना ही परीक्षा देकर वापस चले आते हैं। इसलिए ऐसे लोगों का चयन किसी भी नौक़री के लिए नहीं हो पाता है।

नौक़री के लिए साक्षात्कार देते समय आत्मविश्वास की कमी

कई पढ़े-लिखे लोग जब नौक़री के लिए साक्षात्कार देने जाते हैं तो उससे पहले काफ़ी घबराहट महसूस करते हैं। उनके भीतर आत्मविश्वास की कमी होती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि उनके पास अपने ही विषय से संबंधित पूर्ण जानकारी नहीं होती है। अपने इसी अभाव के कारण साक्षात्कार देने वाला व्यक्ति घबरा जाता है क्योंकि उसे लगता है कि यदि उससे साक्षात्कार में कोई उल्टा-सीधा प्रश्न पूछ लिया गया तो वो क्या करेगा। यही डर उनके चेहरे पर दिख जाता है और साक्षात्कार में ऐसे लोगों को भारी विफलता हाथ लगती है।

मनचाहा काम न मिलने तक घर में ख़ाली बैठे रहना

हालांकि अपनी रुचि के अनुसार काम करने में कोई बुराई नहीं है। लेकिन ऐसे गंभीर विषयों में हमें यथार्थवादी रवैया अपनाने की भी आवश्यकता होती है। ऐसा प्राय: देखा जाता है कि कई लोग तब तक बेरोज़गार बैठे रहते हैं जब तक उन्हें मनचाहा काम न मिल जाए। इस चक्कर में ये लोग नौक़री के कई अच्छे प्रस्तावों को ठुकराने से भी गुरेज़ नहीं करते हैं।

अशिक्षित बेरोज़गारी :-

कम पारिश्रमिक में काम करने के लिए तैयार न होना

कुछ लोग काम पाने की इच्छा तो बहुत रखते हैं किन्तु वे अधिक से अधिक पारिश्रमिक प्राप्त करने की चाहत भी रखते हैं। यदि उन्हें कहीं काम मिल भी जाए तो वे सबसे पहले अपने पारिश्रमिक के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं। यदि उनकी इच्छानुसार पारिश्रमिक मिलने की गुंजाइश न हो, तो वे काम करने से तुरंत मना कर देते हैं और बेरोज़गार बैठे रहते हैं।

डिग्री न होने के कारण अच्छी नौक़रियों से वंचित रहना

जो लोग कम पढ़े-लिखे या पूर्णत: अशिक्षित होते हैं, उनके लिए बाज़ार में अच्छी नौक़रियों की कमी रहती है। क्योंकि इन लोगों के पास किसी अच्छे महाविद्यालय से प्राप्त डिग्री नहीं होती है। इसके कारण इनमें से अधिकांश लोग जीवन में पीछे रह जाते हैं और आर्थिक उन्नति से प्राय: कोसों दूर रहते हैं।

अशिक्षित होने के कारण हीनभावना से ग्रस्त होना

हमारे समाज में कई युवक कुछ निजी कारणों के चलते अशिक्षित रह जाते हैं। आर्थिक समस्या इसका सबसे बड़ा कारण है। इसलिए प्राय: उनके मन में स्वयं के प्रति हीनभावना घर कर जाती है। उन्हें लगता है कि उनके भीतर ही कोई कमी है जिसके कारण वो अच्छी शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाए। किन्तु ये हमेशा सत्य

नहीं होता है। क्योंकि इस संसार में ऐसे कई सफल व्यक्तित्व हैं जिन्हें बचपन में आर्थिक तंगी के कारण शिक्षित होने का अवसर नहीं मिला। किन्तु फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी और विभिन्न कार्यक्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया।

किसी गंभीर मानसिक रोग के चलते पढ़ाई छोड़ देना

कुछ युवक किसी गंभीर मानसिक रोग से ग्रस्त होने के कारण जीवन में बहुत सारी उपलब्धियों को प्राप्त करने से वंचित रह जाते हैं। इनमें से कई लोग तो अपनी पढ़ाई भी पूरी नहीं कर पाते हैं। अतीत में उनके साथ कोई ऐसी घटना घटित हुई होती है जिसके कारण वे अपने मन-मस्तिष्क को उस घटना विशेष से अलग नहीं कर पाते हैं। इसके कारण उनका किसी भी काम में मन नहीं लगता है और इन्हें दीर्घकाल तक बेरोज़गारी झेलनी पड़ती है। कुछ लोगों में मानसिक रोग जन्मजात भी होते हैं। हालांकि इसके शिकार शिक्षित और अशिक्षित बेरोज़गार, दोनों ही हो सकते हैं। ऐसे लोगों को किसी अच्छे मनोरोग विशेषज्ञ के पास परामर्श के लिए जाना चाहिए।

बेरोज़गारी से स्वरोज़गार की ओर :-

अपना व्यवसाय शुरू करने के लिए पर्याप्त मात्रा में मूलधन की आवश्यकता होती है। जिन लोगों के पास वित्तपोषण की कमी है, उन्हें कोई ऐसा व्यवसाय स्थापित करने के बारे में सोचना चाहिए जिसमें मूलधन कम से कम लगे और अधिक से अधिक लाभ अर्जित किया जा सके। स्वरोज़गार को अपनाना अपनी बेरोज़गारी को दूर करने के सरलतम उपायों में से एक है। किन्तु स्वरोज़गार अपनाने से पहले ठीक तरह से योजना बनाने की आवश्यकता होती है। किसी भी व्यवसाय को स्थापित करने से पहले आपको कुछ बातें अच्छी तरह से पता होनी चाहिए। जैसे - जो व्यवसाय आप शुरू करना चाहते हैं, उसके बारे में आपको कितनी जानकारी है? क्या आप उस व्यवसाय को शुरू करने के योग्य हैं? क्या आपके पास पर्याप्त अनुभव है? क्या आपके पास पर्याप्त मात्रा में मूलधन उपलब्ध है? क्या आपने अपनी व्यावसायिक योजना तैयार कर रखी है? इन सभी चीज़ों को सुनिश्चित करने के बाद ही आपको अपने नए व्यवसाय को स्थापित करने के बारे में कोई निर्णय लेना चाहिए। वर्तमान समय में भारत में स्टार्टअप्स शुरू करने का चलन धीरे-धीरे बढ़ रहा है। आजकल हमारे देश में कई सुशिक्षित युवा अलग-अलग महाविद्यालयों से डिग्री प्राप्त करने के बाद विभिन्न प्रकार के स्टार्टअप्स शुरू कर रहे हैं।

किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले उस व्यवसाय के लिए आवश्यक मूलभूत ढांचा तैयार करना बहुत आवश्यक होता है। एक सफल स्टार्टअप किस तरह से स्थापित किया जा सकता है, इसे एक उदाहरण से समझने का प्रयास करते हैं। 'एमबीए चायवाला' जैसा सफल स्टार्टअप स्थापित करने वाले प्रफुल्ल बिल्लौर आज भारतवर्ष में बहुत ही प्रसिद्ध व्यवसायी बनकर उभरे हैं। उन्होंने ऊंचाइयों तक पहुँचने के लिए बहुत संघर्ष किया। उन्होंने तीन बार कैट की परीक्षा भी दी थी। लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली। फिर उन्होंने एक ब्रेक लेकर यात्रा करने का निर्णय लिया। बीस वर्ष की उम्र में उन्होंने अपनी बचत का उपयोग किया। यात्रा करते हुए जब वो अहमदाबाद पहुंचे तो उन्होंने वहाँ रुकने का निर्णय लिया। उन्होंने एक रेस्तरां में पार्ट टाइम नौकरी की। वहाँ उन्होंने एक कैशियर के रूप में काम किया। उनके माता-पिता चाहते थे कि वो कोई डिग्री प्राप्त करें। इसलिए उन्होंने एक एमबीए कॉलेज में प्रवेश ले लिया। प्रफुल्ल बताते हैं कि मैं अपना खुद का व्यवसाय शुरू करना चाहता था, लेकिन मेरे पास धन नहीं था। फिर, एक दिन चाय पीते हुए मैंने चाय वाले से बात की। मुझे लगा कि मुझे अपनी खुद की टपरी खोलनी चाहिए। मैंने तुरंत एक पतीला, एक लाइटर और एक चलनी खरीदी। प्रफुल्ल अपने काम में सब कुछ देना चाहते थे, इसलिए उन्होंने एमबीए छोड़ दिया। बाद में उन्होंने अपनी दुकान पर ओपन माइक सेशन और बुक ड्राइव का आयोजन शुरू किया। दो वर्ष बाद प्रफुल्ल ने अपना कैफे खोला और पूरे भारत में फ्रेंचाइज़ी दी। आज प्रफुल्ल एक सफल व्यवसायी हैं।

अब बात करते हैं देश के ग्रामीण अंचल की। ग्रामीण भारत में बहुत बड़ी संख्या में लोग कृषि क्षेत्र से जुड़े हुए हैं। कृषि हमारे देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। यदि खेती ही नहीं बचेगी तो खाने के लिए खाद्य पदार्थ कहाँ से उपलब्ध हो पाएंगे। वैसे आजकल कुछ सुशिक्षित युवा धीरे-धीरे ही सही, किन्तु खेती-बाड़ी के क्षेत्र में भी अपना करियर बनाने में रुचि लेने लगे हैं। वर्तमान समय में कई आधुनिक व शिक्षित किसान बहुफ़सलीय प्रणाली को अपनाकर बिल्कुल वैज्ञानिक ढंग से खेती कर रहे हैं। इससे उनकी आय में भरपूर वृद्धि भी देखने को मिल रही है।

हमारे देश में बेरोज़गारी की जो विकट समस्या है उसका समाधान केवल नए-नए उद्यमों की स्थापना करके ही किया जा सकता है क्योंकि सरकार देश के सभी युवाओं को नौकरी उपलब्ध नहीं करवा सकती है। सरकार की भी अपनी कुछ सीमाएं होतीं हैं। इसलिए युवाओं को रोज़गार प्राप्त करने के लिए सरकारी नौकरियों पर अपनी निर्भरता कम करनी होगी। नए-नए उद्यमों की स्थापना होने के कारण देश के भीतर बड़ी संख्या में रोज़गार का सृजन होगा और इससे देश में बढ़ती बेरोज़गारी को कम करने में बड़ी सहायता प्राप्त होगी।

तीसरी आँख
सीरीज 2

सुश्री विजिलेंट और मिस्टर प्रूडेंट का क्या कहना है?

हाल ही में बीसी (बिजनेस कॉरेस्पोंडेंट) गतिविधियों की निगरानी में निर्धारित प्रक्रिया का पालन न करने के कारण बैंकिंग उद्योग में बड़ी संख्या में धोखाधड़ी की सूचना मिली है। यह सीरीज, बीसी/ कॉरपोरेट-बीसी की गतिविधियों की निगरानी में सुरक्षा और परिचालन संबंधी विभिन्न दिशानिर्देशों के महत्व को समझाने के लिए विकसित की गई है। इससे शाखाओं को धोखाधड़ी की घटनाओं से बचने और वित्तीय समावेशन के क्षेत्र में बीसी के साथ काम करने के दौरान समय-समय पर निवारक सतर्कता दिशानिर्देशों का पालन करने में मदद मिलेगी।

टीम "एफआरएमडी" एवं "ईएफआरएमएस" द्वारा संकलित

घटनाओं में देखी गई प्रमुख संभावनाएं:-

- बीसी द्वारा खोले गए खातों के प्रमाणीकरण के लंबित रहने के कारण वित्तीय समावेशन का उद्देश्य विफल होने से वास्तविक बीसी गतिविधियां हतोत्साह होती हैं।
- गांवों में वित्तीय संभाव्यता की जांच और आकलन के लिए बीसी केन्द्रों का दौरा नहीं किया जाना।
- बुनियादी ढांचे और अन्य व्यावहारिकताओं का आकलन किए बिना एक बीसी को अधिक गांव आवंटित कर दिए गए।
- बीसी के रूप में नए व्यक्ति को शामिल करते समय कॉर्पोरेट बीसी से प्रतिक्रिया नहीं ली गई और न ही पीयर बैंक से पर्याप्त पूछताछ की गई।
- ईएफआरएम सिस्टम से अलर्ट पर तुरंत ध्यान नहीं दिया जाना अथवा देखने में देरी करना।
- जिन ग्राहकों के खाते बीसी केन्द्रों पर खोले गए और जब वे विभिन्न अवसरों पर शाखाओं में आए तो उनसे बीसी के बारे में प्रतिक्रिया हेतु बातचीत नहीं की गई, जब कि शाखा को उपरोक्त सभी ग्राहकों के मामलों में ऐसा करना चाहिए।
- ग्राहकों की शिकायतों और सुझावों का तुरंत समाधान नहीं करना या उस पर ध्यान देने में देरी करना।
- मौजूदा दिशानिर्देशों के अनुसार बीसी गतिविधियों की उचित निगरानी किए बिना, आँख मूँद कर विश्वास करना।
- नियमित अंतराल पर बीसी केन्द्र पर लेन-देन के अत्यधिक वॉल्यूम की जांच नहीं करना।

अभी क्या करें?

"बीसी निगरानी में, सफल वित्तीय समावेशन के निर्माण खंड हैं।"

- शाखा प्रमुखों/प्रशासन प्रभारी को सूचित किया जाता है कि वे समय-समय पर बीसी केंद्रों का निरीक्षण करें और पासबुक और रिकॉर्ड्स की जांच करना सुनिश्चित करें; बीसी द्वारा की जाने वाली गतिविधियों की निगरानी करें और यदि कोई अन्य अनियमितताएँ पाई जाती हैं, तो उन्हें तुरंत संबंधित आंचलिक कार्यालय को सूचित करें।

सुश्री विजिलेंट और मिस्टर प्रूडेंट का क्या कहना है?

"कभी-कभी आप जो देखते हैं उस पर विश्वास नहीं कर सकते हैं, आपको जो महसूस होता है उस पर विश्वास करना पड़ता है। और अगर आप चाहते हैं कि दूसरे लोग आप पर भरोसा करें, तो आपको यह एहसास होना चाहिए कि आपको उन पर भी भरोसा करना होगा - तब भी, जब आप अंधेरे में हों। तब भी, जब आप गिर रहे हों।"

- मॉरी श्वाट्ज़

(मॉरिस एस ब्रैंडिस विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र के एक अमेरिकी प्रोफेसर और एक लेखक थे)

टीम "एफआरएमडी"
एवं "ईएफआरएमएस"
द्वारा संकलित

- बीसी केंद्रों के कामकाज पर ग्रामीणों से सॉफ्ट जानकारी एकत्र की जानी चाहिए; लेन-देन की प्रणाली एवं प्रक्रिया को बारीकी से देखा जाना चाहिए और यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि पासबुक में कोई मैन्युअल प्रविष्टि नहीं की जा रही है। बीसी केंद्रों पर विज्ञापित नोटिस द्वारा यह सूचित किया जाना चाहिए कि बीसी केंद्र में पासबुक को केवल मुद्रित करने की ही अनुमति है।
- बीसी केंद्र पर किसी भी अनधिकृत व्यक्ति को प्रवेश की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। बीसी केंद्रों का निरीक्षण करते समय आगंतुक अधिकारी सतर्क रहें। टिप्पणियों को आगंतुक रजिस्टर में नोट किया जाना चाहिए और समय पर कार्रवाई सुनिश्चित की जानी चाहिए।
- आंचलिक कार्यालयों को सूचित किया जाता है कि वे बीसी द्वारा की जाने वाली गतिविधियों की निगरानी करें। आंचलिक कार्यालय से शाखा का निरीक्षण करने वाले अधिकारी/ कार्यपालकों को सलाह दी जाती है कि वे बीसी केंद्रों का निरीक्षण करें और सुनिश्चित करें कि संबंधित दिशानिर्देशों का पालन किया जा रहा है। बीसी द्वारा की गई गतिविधियों को ध्यान से देखा जाना चाहिए और यदि कोई विचलन या अनियमितता पाई जाती है तो शाखा द्वारा तुरंत अपने आंचलिक कार्यालय को सूचित किया जाना चाहिए।
- आंचलिक प्रबंधक द्वारा उनके निरीक्षणों के दौरान स्टाफ सदस्यों/ शाखा प्रबंधकों की बैठकों के दौरान शाखा प्रबंधकों को संवेदनशील करना चाहिए।
- आंचलिक कार्यालय के वित्तीय समावेशन डेस्क के अधिकारी यह सुनिश्चित करें कि बीसी केंद्रों से संबंधित सभी दिशानिर्देशों का कड़ाई से पालन किया जा रहा है। बीसी की गतिविधियों की नियमित आधार पर निगरानी भी की जानी चाहिए।
- शाखा प्रमुख/उप-आंचलिक प्रबंधक (एफआरएमडी हेतु नोडल अधिकारी) को व्यक्तिगत रूप से टी+0 टैट (टर्न अराउंड टाइम) के साथ ईएफआरएमएस अलर्ट को बंद करने की निगरानी करनी चाहिए।

सबसे बड़ा गुरु-मंत्र है:

कभी भी अपने रहस्य किसी के साथ साझा न करें।
यह तुम्हें नष्ट कर देगा। - चाणक्य (कौटिल्य)

***

अस्वीकरण: इस सार-संग्रह को बैंकों में धोखाधड़ी के मामलों के विभिन्न तौर-तरीकों का हवाला देते हुए संकलित और तैयार किया गया है और ऐसे सभी परिदृश्यों को सुझावात्मक निवारक उपायों के साथ एक स्थान पर समेटा गया है। किसी भी विवाद/अस्पष्टता के मामले में, पाठक बैंक के विस्तृत शाखा परिपत्रों और आरबीआई के मास्टर निर्देशों का संदर्भ ले सकते हैं।

मेरे प्यारे भारत हम शहीदों को तुम भुला ना देना

मेरे प्यारे भारत, तारीखों में हमको तुम भुला न देना
हम शहीदों की शहादत यूँ ही गवां न देना,
तेरी सरहदों के नाम हमने, अपनी पूरी जिंदगानी कर दी
कभी तपती रेत पर दिन भर भागे,
तो कभी बर्फ की चादर ओढ़े रातें गुजार दी
फिर भी दामन को तेरे, कभी दागदार होने न दिया
तेरी शान के खिलाफ हँसे जो कोई,
दुश्मनों के लिए ऐसा पल यादगार होने न दिया
ऐ मेरे प्यारे हिन्द हम शहीदों को तुम भुला न देना
तेरे सदके जो दी हमने अपने प्राणों की आहुति
उसको यूं गवां न देना
कभी तेरी शान में दुश्मन तोपों को,
सर अपना देकर खामोश किया था हमने
कभी जो तेरी आन पर आयी तो बर्फीली वादियों को
लहू से अपने रंगीन किया था हमने,
सरहदों की चट्टानों पर लहू से अपने
दास्तां वतन-ए-मोहब्बत लिखते चले गए,
लहराते तिरंगे की खूबसूरती पर
हँसते-हँसते मिटते चले गए
कहते गए मुस्कुरा कर ये कारवां एक
सैलाब बन कर आएगा
एक बेटा जा रहा है तो क्या हुआ मां
दूसरा फिर सर पर कफन और
दिल में तिरंगा ले कर आएगा
ऐसे दीवानों की दीवानगी को वतन मेरे भुला न देना,
कुर्बान हुए जो तेरी अस्मत पर,
उनकी कुर्बानियां गंवा न देना
तेरी गोद में फिर खेलें हम, बस यही अरमान लिए चलते हैं
आज तिरंगे में लिपट कर भी बस यही पैगाम दिए चलते हैं
कि बुरी नजर जो डाले कोई तेरी सरहदों की ओर
तो फिर से लौट आएंगे हम
तेरी लाज बचाने को ऐ मां भारती,
फिर से जान की बाजी लगा जाएंगे हम
बस ऐ मेरे मेहबूब वतन हमको तुम भुला न देना
तेरे आज को जो अपना कल दिया था हमने,
उसको यूं गवां न देना....
उसको यूं भूला न देना....

सुनील कुमार राउत
मनईटांड़ शाखा
धनबाद अंचल

संघर्ष

कुछ लड़ाई अपनों से होती है तो कुछ सपनों से,
संघर्ष करना है तो उसे करना ही है।

धड़कता दिल खामोश क्यूं बैठे,
सांसें चलती है तो उसे चलना ही है।

'दीपक' की उमर तेल ही नही
बाती भी तय करती है,
अगर वो जलती है तो उसे जलना ही है।

आरजू-ए-मोहब्बत बर्फ की मानिंद है
कुछ कहानी बनती है तो उसे बनना ही है।

संघर्ष करना है तो उसे करना ही है।।

नितिन कुमार सिंह
मुख्य प्रबंधक
सोनारपुरा शाखा, वाराणसी

देवनागरी की धारा

ममता, माया और माधुर्य लिए
लेखनी में वैज्ञानिक चातुर्य लिए
तुम स्त्रोतस्विनी सी बहती रहो
सगर्व नाम अपना हिंदी कहती रहो..

चंद, तुलसी, मीरा और कबीर
भूषण, प्रेमचंद, दिनकर से वीर
हैं तुम्हारे गगन के आलोकित तारे
तुम देवी हमारी, हम भक्त तुम्हारे..

देश की हो सबसे बड़ी भाषा
हाँ! तुम हो सुंदरता की परिभाषा
दो लाख से अधिक जिसके मूल शब्द
कैसे सुनहरा न हो उसका प्रारब्ध ?

जो भारतवर्ष की सीमाएँ पार कर गई
कितने ही देशों में जिसकी सुरभि उतर गई
ज्ञान-विज्ञान, साहित्य का सर्जन सारा
यूँ ही बहे चतुर्दिक देवनागरी की धारा..

चिराग राजा
राजभाषा अधिकारी
आंचलिक कार्यालय
मदुरै अंचल

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग से प्राप्त क्षेत्रीय पुरस्कार

क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व क्षेत्र) के क्षेत्राधिकार के अंतर्गत 'क' क्षेत्र में 'बैंक' श्रेणी में संघ सरकार की राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु वित्त वर्ष 2021-22 के लिए राँची आंचलिक कार्यालय को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 08 दिसंबर 2022 को भुवनेश्वर में आयोजित पूर्व तथा पूर्वोत्तर क्षेत्रों के 'एक दिवसीय संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह' में माननीय केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा द्वारा श्री संजय कुमार खेमका, आंचलिक प्रबंधक, राँची अंचल को शील्ड तथा श्री राजेश यादव, प्रबंधक (राजभाषा) को प्रमाणपत्र प्रदान कर पुरस्कृत किया गया।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग ने वर्ष 2020-21 के दौरान सर्वश्रेष्ठ कार्यनिष्पादन हेतु 'ग' क्षेत्र में बर्धमान आंचलिक कार्यालय (दुर्गापुर) को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया । दिनांक 08.12.2022 को भुवनेश्वर में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में माननीय केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा ने आंचलिक प्रबंधक श्री गुरु प्रसाद गोंड को शील्ड प्रदान कर तथा संसदीय राजभाषा समिति के माननीय उपाध्यक्ष श्री भर्तृहरि महताब ने वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्री चन्दन कुमार चौधरी को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया ।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 08 दिसंबर 2022 को भुवनेश्वर में आयोजित पूर्व तथा पूर्वोत्तर क्षेत्रों के 'एक दिवसीय संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह' में 'ग' क्षेत्र में 'बैंक' श्रेणी में संघ सरकार की राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु वित्त वर्ष 2021-22 के लिए भुवनेश्वर आंचलिक कार्यालय को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। इस अवसर पर माननीय केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा एवं संसदीय समिति राजभाषा के उपाध्यक्ष श्री भर्तृहरि महताब द्वारा श्री मलयदास एस, आंचलिक प्रबंधक, भुवनेश्वर अंचल को शील्ड तथा श्रीमती सोनिया सावंत, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) को प्रमाणपत्र प्रदान कर पुरस्कृत किया गया।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 08 दिसंबर 2022 को भुवनेश्वर में आयोजित पूर्व तथा पूर्वोत्तर क्षेत्रों के 'एक दिवसीय संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह' में वित्त वर्ष 2020-21 के लिए केंदुझर नराकास को 'नराकास' श्रेणी में तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। इस अवसर पर माननीय केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा से शील्ड ग्रहण करते हुए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, केंदुझर के अध्यक्ष एवं आंचलिक प्रबंधक श्री उमेश कुमार रथ एवं संसदीय समिति राजभाषा के उपाध्यक्ष श्री भर्तृहरि महताब से प्रमाणपत्र ग्रहण करते हुए समिति के सदस्य सचिव एवं प्रबंधक (राजभाषा) श्री संजीव कुमार प्रसाद ।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 08 दिसंबर 2022 को भुवनेश्वर में आयोजित पूर्व तथा पूर्वोत्तर क्षेत्रों के 'एक दिवसीय संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह' में वित्त वर्ष 2020-21 एवं 2021-22 के लिए मुजफ्फरपुर नराकास को 'नराकास' श्रेणी में पुरस्कार प्रदान किया गया। इस अवसर पर माननीय केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा एवं संसदीय समिति राजभाषा के उपाध्यक्ष श्री भर्तृहरि महताब से शील्ड ग्रहण करते हुए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मुजफ्फरपुर के अध्यक्ष एवं आंचलिक प्रबंधक श्री अजय कुमार तथा प्रमाणपत्र ग्रहण करते हुए समिति के सदस्य सचिव एवं वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्री अनूप कुमार तिवारी।

बैंक ऑफ़ इंडिया के संयोजन में कार्यरत विभिन्न नराकास की छमाही बैठकों का आयोजन - दिसंबर तिमाही 2022

नोएडा नराकास

खंडवा नराकास

बड़वानी नराकास

हरदोई नराकास

रत्नागिरी नराकास

नागपुर नराकास

केंदुझर नराकास

अंचलों को प्राप्त नराकास पुरस्कार वर्ष 2021-22

नवी मुंबई अंचल (प्रथम पुरस्कार)

बोकारो अंचल (प्रथम पुरस्कार)

कोलकाता अंचल (तृतीय पुरस्कार)

धनबाद अंचल (तृतीय पुरस्कार)

गुवाहाटी अंचल (तृतीय पुरस्कार)

प्रबंधन विकास संस्थान, नवी मुंबई (तृतीय पुरस्कार)

वडोदरा अंचल (तृतीय पुरस्कार)

गाज़ियाबाद अंचल (तृतीय पुरस्कार)

विशेषज्ञ राजभाषा अधिकारियों के लिए दो दिवसीय उन्नत प्रशिक्षण कार्यक्रम

प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 26 तथा 27 दिसंबर 2022 को एसटीसी, भोपाल में विशेषज्ञ राजभाषा अधिकारियों के लिए दो दिवसीय उन्नत प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में श्री धर्मराज खटीक, निदेशक केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, नई दिल्ली उपस्थित थे। कार्यशाला में अनुवाद, पत्रिका डिजाइन और ई-टूल्स पर व्याख्यान दिए गए। डॉ. बालेंदु शर्मा दाधीच, भारतीय भाषाएँ, माइक्रोसॉफ्ट ने व्याख्यान दिए। श्री सुब्रत कुमार, कार्यपालक निदेशक महोदय ने सभी प्रतिभागियों को ऑनलाइन संबोधित किया। उक्त कार्यक्रम में श्री पी के द्विवेदी, महाप्रबंधक, प्रधान कार्यालय, श्री लोकेश कृष्ण, महाप्रबंधक, एनबीजी-एमपी एवं छत्तीसगढ़, श्री दीपक कुमार गुप्ता, आंचलिक प्रबंधक भोपाल अंचल तथा श्री एस के श्रीवास्तव, प्राचार्य एसटीसी, भोपाल उपस्थित रहे। इस दौरान वर्ष 2021-22 के लिए आंचलिक कार्यालयों के लिए आयोजित राजभाषा शील्ड योजना के पुरस्कार तथा प्रमाणपत्र वितरित किए गए।

गाज़ियाबाद अंचल में हिन्दी संगोष्ठी

गाजियाबाद आंचलिक कार्यालय द्वारा दिनांक 25.11.2022 को "स्वतंत्र भारत में हिन्दी में कामकाज की अनिवार्यता" विषय पर हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर श्री पूरणचंद टंडन, राजभाषा संसदीय समिति की तृतीय उपसमिति के पूर्व सचिव डॉ. सत्येंद्र सिंह, वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएँ विभाग के उपनिदेशक श्री भीम सिंह, महाप्रबंधक, श्री डी. एस. शेखावत, एसटीसी नोएडा की प्राचार्य सुश्री अंजलि भटनागर और उप महाप्रबंधक (राजभाषा), प्रधान कार्यालय, श्री शैलेश कुमार मालवीय ने अपने विचार रखे।

स्टाफ प्रशिक्षण महाविद्यालय नोएडा को प्राप्त नराकास पुरस्कार (प्रथम पुरस्कार)

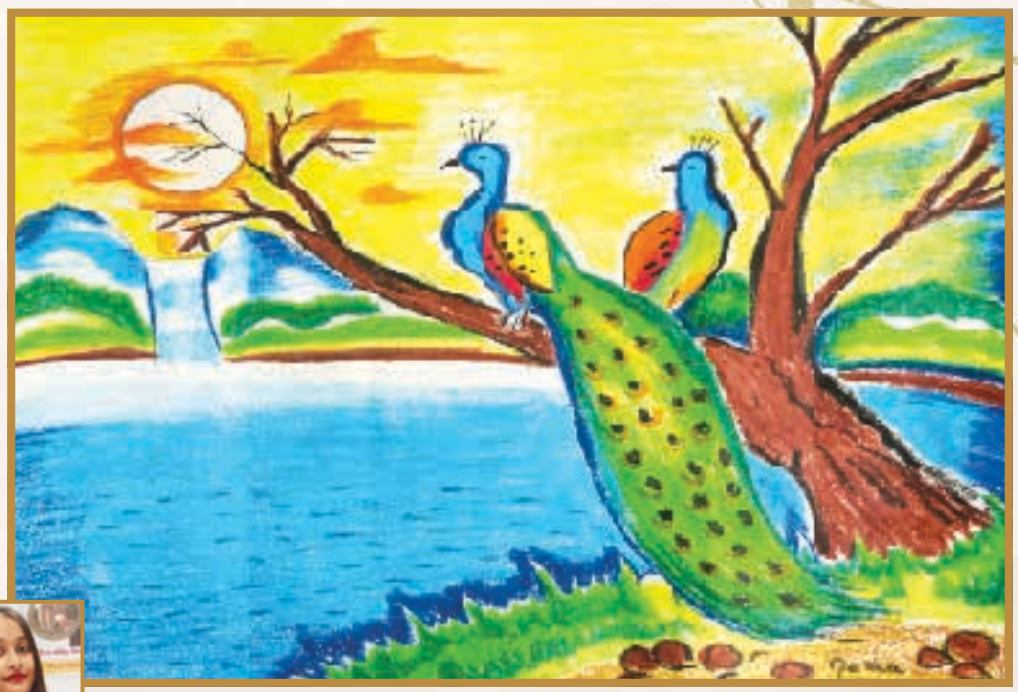

नेहा
अधिकारी
नेवरी शाखा
रांची अंचल

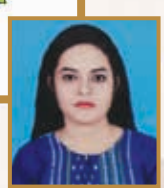

श्वेता यादव
अधिकारी
गोपालगंज शाखा
सीवान अंचल

रिणु रानी साहू
अधिकारी
क्षेत्रजपुर शाखा
संबलपुर अंचल

कोलकाता प्रशिक्षण महाविद्यालय के सौजन्य से